इंडियन बैंक Indian Bank

इलाहाबाद ALLAHABAD

आज़ादी का अमृत महोत्सव

इंड छवि

अंक : 23, दिसम्बर 2022

कॉर्पोरेट कार्यालय में दिनांक 29.09.2022 को हिंदी पखवाड़े के समापन समारोह के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम का शुभारंभ आई बी ऐंथम से किया गया

कार्यक्रम के दौरान कॉर्पोरेट कार्यालय की हिंदी गृह पत्रिका 'इंड छवि' का विमोचन करते हुए प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी, कार्यपालक निदेशकगण तथा अन्य कार्यपालक

इंडियन बैंक Indian Bank
इलाहाबाद ALLAHABAD

इंडियन बैंक
इंड छवि

अंक - 23, दिसंबर 2022

संपादक मंडल

मुख्य संरक्षक
श्री एस.एल. जैन
प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी

संरक्षक
श्री इमरान अमीन सिद्दीकी : कार्यपालक निदेशक
श्री अश्वनी कुमार : कार्यपालक निदेशक
श्री महेश कुमार बजाज : कार्यपालक निदेशक

उप संरक्षक
श्री धनराज टी. : महाप्रबंधक (सीडीओ/राभा)

प्रधान संपादक
श्री अजयकुमार : सहायक महाप्रबंधक (राभा)

संपादक
श्री भूपेश बारोट : प्रबंधक (राभा)

संपादन सहयोग
श्रीमती एम. सुमति : मुख्य प्रबंधक
श्री केदार पंडित : वरिष्ठ प्रबंधक (राभा)
सुश्री आलोचना शर्मा : वरिष्ठ प्रबंधक (राभा)
श्री चंदन प्रकाश मेंढे : वरिष्ठ प्रबंधक (राभा)
श्री राजेश गोंड : वरिष्ठ प्रबंधक (राभा)
सुश्री श्वेता गंगिरेड्डी : प्रबंधक (राभा)
श्री सूरज प्रसाद साव : प्रबंधक (राभा)
श्री सूर्यकांत त्रिपाठी निराला : प्रबंधक (राभा)

मुद्रक : आर एन ग्राफिक - 8010872289

पत्रिका में प्रकाशित लेखों एवं रचनाओं में व्यक्त विचार, लेखकों के अपने हैं। इंडियन बैंक का उनसे सहमत होना जरूरी नहीं है।

पत्रिका में प्रकाशित लेखों/रचनाओं के लेखकों/रचनाकारों से मौलिकता प्रमाणपत्र प्राप्त कर लिया गया है।

अनुक्रमणिका

विषय		पृष्ठ संख्या
1.	प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी का संदेश	
2.	संपादकीय : सहायक महाप्रबंधक (राभा)	
3.	जब आवत संतोष धन, सब धन धूरि समान	4
4.	श्रेष्ठ स्वयं सहायता समूह	5
5.	निराशा को हावी ना होने दें!	6
6.	राष्ट्र निर्माण में युवाओं की भूमिका	9
7.	दृढ़ता	10
8.	अमानत	11
9.	प्रेम पत्र	11
10.	मेरे जीवन की अविस्मरणीय यात्रा	12
11.	हमारा बैंक - इंडियन बैंक	13
12.	वक्त बदल रहा है : मिथ्या या सत्य	14
13.	दिल के अरमान	15
14.	माइक्रोसॉफ्ट एक्सेल- एक बहुआयामी टूल	16
15.	दरवाजे	17
16.	ब्लॉकचैन क्या है	18
17.	उन्मुक्त	20
18.	निसर्ग	20
19.	सामंजस्य	21
20.	सड़क	21
21.	भूख	22
22.	श्रम को गुनाह कैसे कहूँ	23
23.	मैं भी नीलकंठ हो जाता	23
24.	क्या होना चाहता हूँ	24
25.	मोबाइल बैंकिंग के लाभ तथा नुकसान	28
26.	तुम बिन	29
27.	भारत में खुदरा बैंकिंग	30
28.	चोल राजवंश	35

सम्पर्क सूत्र :-
इंडियन बैंक, कॉर्पोरेट कार्यालय,
राजभाषा विभाग, 254-260, अव्वै षण्मुगम सालै,
रॉयपेट्टा, चेन्नै - 600 014
वेबसाइट : www.indianbank.co.in
ई-मेल : hoolc@indianbank.co.in

प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी का संदेश ....

बैंक की गृह पत्रिका **'इंड छवि'** का यह अंक नवीन विचारों एवं विषयों के साथ आपके समक्ष प्रस्तुत करना मेरे लिए अपार हर्ष का विषय है।

साथियों, हिन्दी पत्रिकाओं का प्रकाशन हमारे स्टाफ सदस्यों में अध्ययन की प्रवृत्ति बढ़ाने के साथ-साथ, बैंकिंग गतिविधियों की जानकारी भी प्रदान करता है। यह हमारे कार्मिकों की रचनाधर्मिता को एक मंच प्रदान करते हुए, हम सभी को अभिव्यक्ति का अवसर भी प्रदान करता है। यह पत्रिका, हम सभी की वैचारिक एवं रचनात्मक प्रतिभा को प्रदर्शित करने का माध्यम है जिससे विभिन्न कार्मिकों की रचनाशीलता एवं ज्ञान से पूरा बैंक परिवार लाभान्वित होता है।

आप सभी अवगत है कि बैंकिग क्षेत्र, नित नवीन चुनौतियों से परिपूर्ण एवं गतिशील रहने वाला क्षेत्र है जो हमसे गुणवत्तापूर्ण सेवाओं एवं नवोन्मेषी विचारों एवं उसी अनुरूप कार्य निष्पादन की अपेक्षा रखता है। हम सभी की यह जिम्मेदारी है कि संस्थान की प्रगति एवं प्रतिष्ठा में पूर्ण निष्ठा के भाव से श्रम करें क्योंकि इसी में हमारी पहचान एवं उन्नति निहित है। हमें इस दिशा में अनवरत प्रयास करने होंगे।

वर्तमान डिजिटलीकरण के युग में, हमें अपने डिजिटल प्लेटफॉर्म को उच्च तकनीकी से संपन्न, निर्बाध एवं ग्राहक अनुकूल बनाना होगा ताकि हमारी उत्कृष्ट ग्राहक सेवा, हमारे ग्राहक दायरे को भी विस्तृत कर सके। आने वाला युग डिजिटल बैंकिंग का युग है। डिजिटल बैंकिंग सुरक्षित, सर्वव्यापी एवं निर्बाध है।

बैंक ने इस दौरान कई नवोन्मेषी कदम उठाए हैं। इस वर्ष हमने मानव संसाधन प्रबंधन में व्यक्तिपरकता कम करने एवं निष्पक्ष, योग्यता आधारित तथा पारदर्शी संस्कृति निर्मित करने के लिए परफॉर्मेंस मैनेजमेंट सिस्टम "इंड-प्राइड" (परफॉर्मेंस रीव्यू फॉर डवलपमेंट एण्ड एक्सीलेंस) की शुरूआत की है। इस टूल के द्वारा प्रत्येक अधिकारी का मूल्यांकन उसकी भूमिका, केआरए एवं उपलब्धि के आधार पर किया जाएगा। इसमें विविध टूल हैं जो कर्मचारियों के कार्य निष्पादन से संबंधित हैं। इस टूल के द्वारा बैंक उन अधिकारियों की पहचान कर सकता है जिनको क्षमता निर्माण के लिए प्रशिक्षण की आवश्यकता है। यह मूल्यांकन का एक नवोन्मेषी तरीका है और यह एक बहुआयामी परियोजना है। इसके जरिये अधिकारी अपने-अपने कार्य निष्पादन का स्वयं भी मूल्यांकन कर सकेंगे।

बैंकिंग सेवाओं की अखिल भारतीय प्रकृति होने के कारण कार्मिकों को देश के विभिन्न प्रदेशों में कार्य करने का अवसर मिलता है अतः अधिकारियों के भाषा-ज्ञान एवं संप्रेषण कुशलता का व्यवसाय विकास पर गहरा प्रभाव पड़ता है तथा यह उस क्षेत्र विशेष की भाषा के सामान्य ज्ञान के बिना मुश्किल है। अतः हमें अधिक से अधिक भाषाएं सीखनी चाहिए।

आप सभी को नव वर्ष की हार्दिक शुभकामनाएँ

एस.एल. जैन

प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी

संपादकीय

इंड-छवि का नवीनतम अंक आपके समक्ष प्रस्तुत है। इस पत्रिका के माध्यम से आप सभी से संवाद स्थापित करने का अवसर मेरे लिए विशेष होता है। हिन्दी पत्रिकाओं के प्रकाशन का उद्देश्य, हमारे बैंक में होने वाली विभिन्न गतिविधियों को दर्शाने के साथ-साथ, हमारे स्टाफ सदस्यों की रचनात्मकता एवं विचारों को मंच प्रदान करना भी होता है।

हमारा पूरा प्रयास रहता है कि इंड छवि के माध्यम से हम देशभर में हमारे कार्यालयों व कार्मिकों को रचनात्मक अभिव्यक्ति का अवसर प्रदान करें। पिछले अंकों में हमने विषय विशेष पर आधारित विशेषांकों का निर्माण किया था तथा इस बार हम मिले-जुले विषयों पर आधारित इंड छवि के इस नवीनतम अंक को आपके समक्ष प्रस्तुत कर रहे हैं।

साथियों, भाषा विचारों की वाहक होती है तथा किसी भी विचार या संदेश का अधिकतम एवं गहराई से संप्रेषण, भाषा की व्यवहार्यता एवं स्वीकार्यता पर निर्भर करता है। आदिम काल से ही भाषाएं मानव की उन्नति एवं प्रगति की यात्रा की साक्षी रही हैं। किसी भी व्यवसाय एवं गतिविधि में भाषा महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

भाषाओं में मानव समाज को आपस में जोड़ने एवं किसी भी रचनात्मक कार्य के सहज कार्यान्वयन की अपार संभावनाए होती है। चूँकि हम व्यवसाय से जुड़े हुए हैं इसलिए हमारे लिए भाषा का विशेष महत्व है। ग्राहकोन्मुख भाषा हमारी सेवाओं एवं उत्पादों के विपणन के लिए एक अनिवार्य शर्त है। भारत के एक बहुभाषी देश होने के कारण, हमें हिंदी के साथ-साथ क्षेत्रीय भाषाओं को भी समझना एवं सीखना होगा। यह हमारी व्यावसायिक उन्नति की दृष्टि से भी आवश्यक है।

अंत में हिंदी के प्रसिद्ध कवि मैथिलीशरण गुप्त की कविता की प्रेरक पंक्तियों से अपनी बात समाप्त करता हूँ।

चलो अभीष्ट मार्ग में सहर्ष खेलते हुए,
विपत्ति विघ्न जो पड़ें उन्हें ढकेलते हुए।
घटे न हेल मेल हाँ, बढ़े न भिन्नता कभी,
अतर्क एक पंथ के सतर्क पंथ हों सभी।
तभी समर्थ भाव है कि तारता हुआ तरे,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।।

- मैथिलीशरण गुप्त

नव वर्ष की शुभकामनाओं के साथ

अजयकुमार
सहायक महाप्रबंधक (राभा)

जब आवत संतोष धन, सब धन धूरि समान

आशीष मैथ्यू
मुख्य प्रबंधक
स्टाफ प्रशिक्षण केन्द्र, मुम्बई

गो-धन, गज-धन, वाजी धन और रतन धन खान
जब आवत संतोष धन, सब धन धूरि समान

तुलसीदास कृत यह दोहा हम सभी ने बचपन में पढ़ा है। उस समय इसके अर्थ की गहराई को हम शायद उतना नहीं समझ पाए जितना की आज जान पा रहे हैं। याद कीजिए बचपन के वे दिन जब साइकिल का टायर घुमाते हुए भागते थे। आज कार की सवारी भी उतनी रोमांचित नहीं करती है। आज मिनरल वाटर की सुलभ पानी की बोतल में वो बात नहीं जो पहले चलते-फिरते किसी भी सार्वजानिक नल पर हाथ से चुल्लु बना कर पानी पीने में आनंद आता था। वैसे भी जो सुलभ है, वह उतना आनंद नहीं देता जिसके लिए प्रयास किया जाए, वह मन को ज्यादा तृप्त करता है।

तृप्त से याद आया कि यह तृप्ति का पैमाना सभी के लिए अलग-अलग है। पहिए का अविष्कार हुआ तो पैदल चलने वाले व्यक्ति के लिए बैलगाड़ी बहुत बड़ी बात हो गई। साइकिल से दुपहिया वाहन, फिर कार, बस, रेलगाड़ी, अब हवाईजहाज। इस विकास की यात्रा में, मनुष्य ने क्या खोया? उत्तर है, मन का चैन। आप पूछेंगे कि क्या हम तरक्की न करें? विज्ञान की सेवाओं का लाभ न उठाए? जी नहीं, मेरा यह तात्पर्य बिलकुल नहीं है। मेरे कहने का अर्थ सिर्फ यही है कि जितनी सुविधा, जितना सुख, हम पा रहे हैं, तृष्णा उतनी ही बढ़ती जा रही है। धन कमाने की अंधाधुंध दौड़ में अपने पीछे छूटते जा रहे है। भविष्य के प्रति असुरक्षा की भावना जितनी आज हैं, पहले कभी नहीं थी। भविष्य की चिंता में, हम आज का सुख चैन सब खोते जा रहे हैं। पकवानों की चाह में हम दाल चावल का लुत्फ नहीं उठा पा रहे हैं।

जिंदगी की इस मैराथन में, हमें समय नहीं है कि साथ दौड़ने वाले पर भी नजर डालें। कोई कहीं गिर तो नहीं गया, किसी को चोट तो नहीं लगी, कोई पीछे छूट तो नहीं गया। चिंता इस बात की है कि कहीं हम एक मिनट रुक जाए तो कोई हम से, आगे न निकल जाए। जिस परिवार की चिंता में हम पैसे जोड़ रहे हैं, उन्हें ही वक्त नहीं दे पा रहे हैं। सभी के हाथों में फोन है लेकिन फिर भी एक दूसरे के दु:ख से अनजान हैं। सभी हवाईजहाज में घूम रहे हैं लेकिन किसी की बीमारी पर, हम समय से नहीं पहुँच पा रहे हैं जितना कि पहले एक टेलीग्राम से पहुँच जाते थे।

मृत्यु शाश्वत है, कल का कोई भरोसा नहीं किन्तु फिर भी हम कल के लिए जी रहे हैं। सुनहरे कल की चिंता में आज का सुख नहीं भोग पा रहे हैं। संचय और दिखावे की प्रवृत्ति से सभी ग्रस्त हैं। आज मनुष्य जितना स्वार्थी हो गया है, उतना पहले कभी नहीं था। महीनों तक रुके रिश्तेदार भी मेजबान को चिंतित नहीं करते थे। आज दो दिन कोई रुक जाए तो हम पर भारी पड़ जाता है हालांकि पहले से अब हम सभी आर्थिक रूप से ज्यादा सक्षम हैं। इस दौड़ती भागती अतृप्त जिंदगी ने निराशा, अवसाद, घबराहट इत्यादि को जन्म दिया है। पहले मानसिक रोगों एवं रोगियों की संख्या इतनी नहीं थी जितनी की आज है।

अमीर अनिद्रा का शिकार है। नींद की गोली लेकर सो रहा है। भूख लगने के लिए दवाई का सेवन कर रहा है। गरीब को इन सब की आवश्यकता ही नहीं पड़ती, उसे भूख भी लगती है, खाया-पिया हजम भी हो जाता है

और भरी गरमी में भी चैन की नींद सो जाता है। क्योंकि वह चिंतामुक्त है जो है उसी में संतुष्ट भी है। किसी को चटनी रोटी में भी खुशी मिल रही है तो कोई छप्पन भोग से भरी थाली खाकर भी अतृप्त है।

क्या इसका मतलब यह है कि हम भविष्य के लिए संचय ना करें? आने वाली विपत्तियों और बीमारी के बारे में ना सोचें? अपने बच्चों को अच्छे स्कूल में ना डालें? उसके भविष्य का ना सोचें? कदापि नहीं।

सोचें, किन्तु उतना ही जितना आवश्यक है जितना हम कर पाने में सक्षम हैं। उतना ही जितना कि यह प्रयास हमारे बीच दूरी ना पैदा करे। हमारे स्वास्थ्य के साथ खिलवाड़ ना करे।

आप आज हैं, पर कल का कुछ पता नहीं इसलिए छोटी-छोटी चीजों में भी खुशियाँ ढूंढिए। कभी भरे पानी में कागज़ की कश्ती चला कर देखिए। कभी बालकनी में बैठे हाथ बढ़ा कर, बरसात की बूंदों का आनंद लीजिए। कभी किसी बच्चे की अबोध खिलखिलाहट में आनंद ढूंढिए। किसी वृद्ध के पास जाकर बातें कीजिए। यह उम्र का वह दौर है, जब अकेलापन सब से ज्यादा सालता है फिर उस पोपले चेहरे पर मुस्कान देखिए जो आपकी बदौलत उभरी है, क्या यह सुखदायक नहीं?

आज मुझे हेलन केलर की एक बात याद आती है, एक जगह उन्होंने लिखा है कि एक बार उनके मित्र जंगल की सैर कर वापस लौटे तो उन्होंने मित्र से पूछा कि आपने वहाँ क्या देखा? मित्र ने उत्तर दिया, कुछ खास नहीं। हेलन को हैरानी हुई। वे दृष्टिहीन थी, वह लिखती हैं कि विधाता ने किसी को दो आँखे दी हैं। यह प्रकृति सौंदर्य से भरपूर है और उन्होंने वहाँ कुछ नहीं देखा। मैं तो झरनों के बहते जल में हाथ लगा, पानी के स्पर्श से रोमांचित हो जाती हूँ। पत्तियों को छूकर उसकी बनावट जान जाती हूँ। जो नहीं है, उस पर दुखी होने की बजाय जो है, उस पर प्रसन्न होना सीखिए।

किसी ने सच ही कहा है -

भागती सी जिन्दगी
बिखरते से अरमान
जमीं की दौड़ में, ढूँढ़ते रहे
एक टुकड़ा आसमान।

श्रेष्ठ स्वयं सहायता समूह

ओम प्रकाश भाकर
सहायक महाप्रबंधक एवं प्राचार्य

गीता शीला और संगीता मिलकर
एक साथ आगे बढ़े प्रगति के पथ पर
मिले हाथ से हाथ।।

औपचारिक बैठक कर तैयार किया
संगठन संचालन की रूपरेखा का
बैठक में किया मंचन।।

छोटी-छोटी बचत से किया
पूंजी का सृजन बचत की
इस राशि का जरूरत पर आवंटन।।

राशि का जरूरत पर आवंटन
देय तिथि पर भुगतान श्रेष्ठ
स्वयं सहायता समूह का
यही है प्रमाण।।

जब समूह प्रगति के पथ पर आगे है
बढ़ता बैंक लिंकेज आवश्यक है
रहे धन की तरलता।।

सामाजिक बुराई एवं कुरीतियां
गरीब के लिए हैं अभिशाप
समूह बनाकर प्रगतिशील बहनें
करती हैं इनकी विदाई का जाप।।

समूह एकता की ताकत
महिला सशक्तिकरण का मंत्र
लाख रुकावटें हों पथ पर
स्वागत करेगा तंत्र।।

निराशा को हावी ना होने दें!

गौतम कुमार गोस्वामी
प्रबन्धक, इंडियन बैंक
अंचल कार्यालय, रांची

निराशा एक महाव्याधि है, जो व्यक्ति की संपूर्ण शक्तियों एवं संभावनाओं को कुंद करके रख देती है। इसीलिए निराशा को शास्त्रों में पाप माना गया है। जिससे स्वयं को आनंद न मिले, औरों को प्रसन्नता न मिले, उस निराशा को पालने में क्या समझदारी? जबकि उत्साह जीवन की संजीवनी है। वाल्मीकि रामायण में कहा गया है कि उत्साह में बड़ा बल होता है, उत्साह से बढ़कर अन्य कोई बल नहीं है। उत्साही व्यक्ति के लिए संसार में कोई वस्तु दुर्लभ नहीं है।

आशा, जहां जीवन में संजीवनी शक्ति का संचार करती है तो वहीं निराशा व्यक्ति को मृत्यु की ओर ले जाती है क्योंकि निराश व्यक्ति जीवन से उदासीन और विरक्त होने लगता है। जीते जी जैसे जीवन मृतप्राय सा हो जाता है। उसे अपने चारों ओर अंधकार फैला हुआ दिखता है और व्यक्ति मानसिक शिथिलता की अवस्था में आ जाता है। इस तरह उत्साह के अभाव में जीवन दूभर हो जाता है। उत्साहहीन के लिए सब कुछ कठिन हो जाता है।

जीवन से निराश व्यक्ति अपने कर्तव्य के प्रति भी उदासीन हो जाता है और इसके प्रति अनिच्छा व हीनता की भावना लिए होता है। परिणामस्वरूप उसके जीवन में किसी तरह की भव्यता और संपन्नता की आशा नहीं की जा सकती। उसके आश्रय में पल रहे स्वजन भी अविकसित ही रह जाते हैं। इस तरह उत्साहहीनता एक तरह का अपराध ही कही जाएगी। इस मन:स्थिति से जितना जल्दी उबरा जा सके, उतना बेहतर रहता है। यह निराशा के कारणों को समझने पर किया जा सकता है।

निराशाभरी मन:स्थिति के कई कारण हो सकते हैं। यह शरीर में किसी रोग या विकार के कारण पनप सकती है। पेट में अपच, कब्ज, गंदी वायु, अत्यधिक श्रम एवं भाग-दौड़, विश्राम, नींद का अभाव, थकान के कारण भी उदासीनता पैदा हो जाती है। हालांकि इस तरह की निराशा से उबरना अधिक कठिन नहीं होता। जीवनशैली में आवश्यक सुधार, संतुलित जीवनचर्या एवं प्राकृतिक नियमों के पालन के साथ व्यक्ति स्वास्थ्य लाभ करते हुए ऐसी मनोदशा से उबर भी जाता है।

निराशा का एक बड़ा कारण रहता है स्वयं से बढ़ी-चढ़ी अपेक्षाएँ करना और जीवन के यथार्थ को स्वीकार नहीं कर पाना। जैसा हम सोचते हैं, वैसे ही सारा संसार सोचने लगे या हमारी हर बात मानने लगे या सब कुछ हमारे अनुकूल हो जाए, ऐसी बचकानी एवं अतिवादी सोच निराशा का कारण बनती है। इस परिवर्तनशील एवं वैविध्यपूर्ण संसार में सब कुछ हमारे हिसाब से हो व यथावत् बना रहे, ऐसी कामना का पूर्ण होना कैसे संभव है?

लाभ-हानि, संयोग-वियोग, बुढ़ापा, मृत्यु के क्षण इस जीवन के यथार्थ हैं। इसे स्वीकार करने से मन अनावश्यक निराशा और विषाद से मुक्त हो जाता है। इस यथार्थ को स्वीकार करने के अतिरिक्त और कोई

मार्ग भी नहीं है। इस आधार पर परिवर्तन के शाश्वत विधान की लय में जीवन को समायोजित करना एक बड़ा कौशल माना जा सकता है।

वर्तमान को छोड़कर भूत एवं भविष्य में अत्यधिक विचरण करना भी निराशा का कारण बनता है। कुछ लोग पूर्व में हुई हानि, अपमान, पीड़ा और गलतियों आदि के कारण क्षुब्ध रहते हैं। कुछ भविष्य के खतरों व अनहोनी की भयावह कल्पनाएँ करके अवसादग्रस्त हो जाते हैं। दोनों ही स्थितियाँ वांछित नहीं हैं। भूतकाल का चिंतन तथा इसके प्रति ग्लानि-पश्चाताप में निराश-हताश रहना, गढ़े-मुरदे उखाड़ने जैसा है, जिससे कुछ सार्थक हाथ नहीं लगता है। इसी तरह भविष्य की उधेड़बुन में चिंतित रहना भी उचित नहीं है। इससे वे अधिकांश बातें तो घटित ही नहीं होती हैं। इसके बजाय पुरानी गलतियों से सबक लेकर, उज्जवल भविष्य के संकल्प के साथ वर्तमान में पुरुषार्थ करते रहें तो ऐसे में भूत के विषाद तथा भविष्य की चिंता से उपजी निराशा से छुटकारा पाया जा सकता है।

निराशा का दृष्टिकोण से भी सीधा संबंध रहता है। जैसी सोच व भावनाएँ होंगी, वैसी ही प्रेरणाएँ भी उभरती रहती हैं। यदि दृष्टिकोण एवं भावनाएँ स्वार्थप्रधान हैं और हमें अपने ही लाभ का चिंतन अधिक रहता है, तो ऐसे में असंतोष, अवसाद और निराशा का हावी होना तय है। इसके विपरीत जितना हम परमार्थपरायण सोच सकते हैं, जनकल्याण का भाव रखते हैं, उतना ही जीवन आशा, उत्साह और प्रसन्नता से भरा होगा।

इस तरह स्वार्थ से परमार्थ की ओर जीवन का पलड़ा पलटते ही निराशा का अंधेरा छंटने लगता है और आशा का नवसंचार होता है। किसी बँधे-बँधाए ढर्रे पर चलते रहने से उपजी उब भी निराशा का कारण बनती है। इस अवस्था से उबरने के लिए जीवन में विविधता का होना महत्वपूर्ण हो जाता है। कला, संगीत, साहित्य, खेल, मनोरंजन, लोकसंपर्क, यात्रा, तीर्थाटन, धार्मिक कृत्य आदि जीवन के अनेक पहलुओं को अपनी रुचि के अनुरूप दैनिक जीवनक्रम में स्थान देने से उत्साह के कई आधार तैयार किए जा सकते हैं। बहुत अधिक सोचते रहने से भी निराशा पनपती है। एक तो ऐसे में कोई ठोस व्यावहारिक कदम नहीं उठ पाता तथा जीवन विफलताओं से भरा रहता है और ऐसे में भूलवश कोई बुराई या गलत कार्य हो जाए तो वह मामूली कुकर्म भी भारी अपराध जान पड़ता है। ऐसे में हीनता की भावना पैदा होती है, निराशा घर कर जाती है और मन अवसाद से ग्रसित हो जाता है। इस तरह की कुढ़न के समाधान के लिए यह आवश्यक हो जाता है कि मन को लक्ष्य में व्यस्त रखें और बहुत अधिक सोच-विचार न करें। जीवन को एक खेल समझकर जिएँ, इस जीवनरूपी रगमंच के नाटक में कुशल पात्र की भांति अपनी भूमिका अदा करें। यदि राह में कोई गलती हो जाए तो उसे अधिक गंभीरता से न लें, बल्कि इससे सीख लेकर आगे बढ़ें।

फिर जीवन सुबह और शाम, रात और दिन जैसे दोनों पक्षों के साथ मिलकर बनता है। इसके प्रति सम्यक दृष्टि हलके-फुलके जीवन का आधार बनती है। इसलिए केवल अँधेरे पर ही ध्यान केंद्रित न करें, सकारात्मक पक्ष पर भी विचार करें। जीवन के घनघोर अंधकार के बीच उज्ज्वल संभावनाओं के बीज अवश्य मिलेंगे। इसको अपने पुरुषार्थ एवं सतत प्रयास का खाद-पानी देते रहें। ये समय पर पुष्पित-पल्लिवत होकर अवश्य ही जीवन की बगिया को महकाएंगे। इस तरह ईश्वरीय विधान पर अटल आस्था के साथ अपनी संभावनाओं पर सतत कार्य किसी भी तरह की निराशा से उबरने का एक सुनिश्चित राजमार्ग साबित होता है।

राष्ट्र निर्माण में युवाओं की भूमिका

ईशु गर्ग
सहायक प्रबंधक
हनुमानगढ़ शाखा

राष्ट्र निर्माण से तात्पर्य राज्य की शक्ति का उपयोग करके एक राष्ट्रीय पहचान की संरचना करने की प्रक्रिया से है। इसका उद्देश्य राष्ट्र के नागरिकों को एकजुट करना है ताकि यह राजनीतिक रूप से स्थिर और व्यवहार्य रहे। हमारे देश के युवा हमारे राष्ट्र का भविष्य हैं और जनसंख्या के सबसे गतिशील खंड का प्रतिनिधित्व करते हैं। भारत जैसे विकासशील राष्ट्र में युवाओं का योगदान बहुत महत्त्वपूर्ण है। देश का मूल्य उसके नागरिकों द्वारा जाना जाता है, यह लोगों का बुद्धि कौशल और कार्य है जो राष्ट्र को प्रगति की ओर ले जाता है।

हमारे देश का प्रत्येक नागरिक हमारे देश की प्रगति और विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यदि हमारे युवा गंभीरता से देश के विकास के लिए कार्य करना शुरू करते हैं, तो वे राष्ट्र के महत्वपूर्ण अंग बन सकते हैं और इसके विकास में महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं।

प्रगति के प्रमुख तत्व

तीन प्रमुख तत्व हैं जो एक राष्ट्र की प्रगति में योगदान करते हैं। ये शिक्षा, रोजगार और सशक्तिकरण हैं। जब देश के युवाओं को शिक्षित किया जाता है और उनकी शिक्षा का सही उपयोग किया जाता है, तो राष्ट्र एक स्थिर गति से विकसित होता है। अशिक्षा हमारे राष्ट्र की सबसे बड़ी समस्याओं में से एक है। हमारे देश की आबादी में निरक्षरता हमारे देश की प्रगति में बाधा डालती है। हमारे देश की सरकार को युवाओं को तार्किक, तर्कसंगत और खुले दिमाग से सोचने के लिए उन्हें सही शिक्षा प्रदान करने के लिए विशेष प्रयास करने चाहिए। यह उन्हें एक जिम्मेदार तरीके से कार्य करने और हमारे राष्ट्र की प्रगति के लिए काम करने में मदद करेगा।

राष्ट्र के बेरोजगार युवाओं को रोजगार के अवसर प्रदान करना भी बहुत महत्वपूर्ण है। रोजगार के अवसरों की कमी से सामाजिक अशांति हो सकती है। युवाओं को अपने जीवन की जिम्मेदारी संभालने के लिए सशक्त बनाना जरूरी है। उनके अधिकारों को बढ़ावा देना और उन्हें सामुदायिक निर्णय लेने में शामिल करना महत्वपूर्ण है।

युवाओं की ऊर्जा और बुद्धि को सही दिशा में प्रसारित करना और उन्हें उनकी क्षमता के अनुसार रोजगार के अवसर प्रदान करना महत्वपूर्ण है। नहीं तो वे जीवन में गलत रास्ते पर जा सकते हैं। युवाओं को हिंसक या अन्य बुरी गतिविधियों में शामिल होने से रोका जाना चाहिए।

युवा हमारे देश का भविष्य है

युवा न केवल आज का साथी है बल्कि कल का नेता भी है। युवा सीखने, कार्य करने और लक्ष्य प्राप्त करने के लिए ऊर्जा और उत्साह से भरा हुआ है। वे सामाजिक अभिनेता हैं जो समाज में क्रांतिकारी परिवर्तन और सुधार लाने के लिए प्रदर्शन कर सकते हैं। समृद्धि, प्रगति, शांति और सुरक्षा के भविष्य में किसी भी प्रकार के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए युवाओं की भागीदारी होनी चाहिए। यदि हमारा राष्ट्र विज्ञान, प्रौद्योगिकी, वित्त, स्वास्थ्य, नवाचार के क्षेत्र में प्रगति करना चाहता है

तो युवाओं की उत्साही और ईमानदार भागीदारी की आवश्यकता है। प्रगति प्राप्त करने के लिए युवाओं की ऊर्जा, रचनात्मकता, उत्साह, दृढ़ संकल्प और भावना को चरणबद्ध किया जाना चाहिए। राष्ट्रीय विकास में युवाओं की भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए, उन्हें अपने माता-पिता, सभ्य समाज और सरकार द्वारा प्रोत्साहन और समर्थन की आवश्यकता है।

युवा देश के उत्तरदायी नागरिक भी हैं

युवाओं का अपने राष्ट्र के प्रति कुछ उत्तरदायित्व है, जिसे उन्हें हमारे राष्ट्र की प्रणाली को दोष देने के बजाय पहचानना और अभ्यास करना होगा। अगर देश के युवा एक साथ आते हैं और हमारे देश के भविष्य को आकार दे सकते हैं। यह रवैया कि "क्या एक व्यक्ति पूरे राष्ट्र में बदलाव ला सकता है ...?" प्रगति में बाधा डालता है। राष्ट्र की सेवा करने के लिए सही रवैया और आग्रह बहुत महत्वपूर्ण है। परिवर्तन और प्रगति लाने के लिए युवाओं को सामाजिक उतरदायित्व लेना होगा।

कुछ घटक जो युवाओं की प्रगति और विकास में बाधा बनते हैं-

बेरोजगारी, और गरीबी कुछ ऐसे कारण हैं जो युवाओं को व्यक्तिगत उन्नति के साथ समाज के लिए अपनी पूरी क्षमता का उपयोग करने से वंचित करते हैं। सस्ती और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और प्रशिक्षण तक पहुँच न होने के कारण हमारे समाज में बेरोजगारी की समस्या प्रचलित है। बुजुर्ग और रूढ़िवादी वयस्कों द्वारा शासन की समस्या के कारण युवाओं को पर्याप्त अवसर उपलब्ध नहीं हो पाते हैं। रचनात्मक क्षेत्रों में भविष्य बनाने के लिए प्रबुद्ध समुदाय द्वारा युवाओं को समर्थन और प्रेरणा की महती आवश्यकता है।

राष्ट्र की प्रगति और विकास में युवाओं के योगदान को पूरी तरह से समझा नहीं गया है। सरकार और अन्य नीति निर्माताओं के मार्गदर्शन, समर्थन और मान्यता के बिना, युवा अपनी पूरी क्षमता का उपयोग किए बिना अक्सर असफल रहते हैं, जो उनके जीवन और समाज पर नकारात्मक प्रभाव डालता है। प्रोत्साहित और प्रेरित नागरिकों के रूप में युवा समाज में सकारात्मक बदलाव लाने के लिए सबसे महत्वपूर्ण संसाधन हैं। उनमें राष्ट्र की प्रगति और विकास की प्रक्रिया में नेतृत्व करने की क्षमता है।

राष्ट्र निर्माण में सरकार की भूमिका

सरकार को निर्णय लेने की प्रक्रिया में शामिल करके युवाओं को सशक्त बनाना चाहिए। बढ़ती अर्थव्यवस्था में युवाओं की भागीदारी देशभक्ति की भावना को बढ़ावा देगी और उन्हें राष्ट्र के जिम्मेदार नागरिक बनने के लिए प्रोत्साहित करेगी। यह राष्ट्र की प्रगति में उनकी रुचि को और भी बढ़ाएगा जिससे राष्ट्रीय विकास होगा। यह हमारे युवाओं के विकास और शिक्षा के लिए अन्य साधन प्रदान करके उनके भविष्य के निर्माण के लिए भी महत्वपूर्ण है।

शिक्षा एक व्यक्ति के लिए सही नींव बनाने में मदद करती है और उसे स्वतंत्र विकल्प बनाने और अपने सपनों को साकार करने का अधिकार देती है। युवाओं को उनके व्यक्तिगत विकास और राष्ट्र के आर्थिक विकास के लिए अपनी ऊर्जा और कौशल को व्यवहार में लाने के लिए रोजगार के अवसर प्रदान करने होंगे जो अंततः राष्ट्र की समग्र प्रगति और विकास को बढ़ावा देगा। हमें अपने राष्ट्र की प्रगति के लिए अपने युवाओं की शक्ति का उपयोग करने की आवश्यकता है। हमें उनकी ऊर्जा, नवीन विचारों और अद्वितीय दृष्टिकोणों का अधिकतम लाभ उठाना चाहिए। युवा निश्चित रूप से राष्ट्र के सबसे कीमती संसाधन हैं और उनकी पूरी क्षमता का उपयोग किया जाना चाहिए।

दृढ़ता

रश्मि साह
वरिष्ठ प्रबंधक
अंचल कार्यालय, हैदराबाद

आज ऑफिस में बहुत काम था। काम करते करते पता ही नहीं चला, कब इतना समय बीत गया। यह सोचते-सोचते, काजल तेज कदमों से स्टेशन की तरफ जा रही थी। रात के नौ बज चुके थे। इस समय स्टेशन भी प्रायः सुनसान हो जाता है। काजल अपनी सोच में ही आगे बढ़ती जा रही थी, प्लेटफॉर्म पर जाने के लिए एक गलियारे से गुजरना पड़ता था। वह उससे गुजर ही रही थी कि उसे किसी बच्चे के रोने की आवाज सुनाई दी। उसने चारों तरफ नजर घुमाई पर उसे कुछ नजर ही नहीं आया, मगर रोने की आवाज आ रही थी। एक तरफ तो उसे देर हो रही थी, लेकिन वह आवाज उसे अपनी ओर खींच रही थी।

चारों तरफ ध्यान से देखने के बाद उसे एक बेंच के नीचे बोरे जैसा कुछ दिखा। पास जा कर देखा, तो आवाज वहीं से आ रही थी। हाथ बढ़ा कर, बोरे को टटोला तो देखा कि उसके अन्दर हाड़-मांस का नवजात शिशु है। उसने संभाल कर धीरे से बोरे को बेंच के नीचे से निकाला और खोल के देखा, तो उसके होश उड़ गए। बोरे के अन्दर एक प्यारी गुड़िया रो रही थी। उसने उसे गोद में उठाया और चारों तरफ उसकी माँ को ढूँढने लगी। वह जोर-जोर से आवाज लगा रही थी, परन्तु उसे कोई दिखाई नहीं दिया। उसने बाहर आ कर प्लेटफॉर्म पर भी ढूँढा, चारों तरफ लोग थे, पर कोई भी उसकी आवाज का उत्तर नहीं दे रहा था।

अब उसे समझ नहीं आ रहा था कि वह उस बच्ची को लेकर अस्पताल जाए या पुलिस स्टेशन। उधर वह बच्ची लगातार रोये जा रही थी। फिर उसने सोचा कि बच्ची भूख से तड़प रही है। पहले इस बच्ची का पेट भरा जाए, लेकिन वहाँ कुछ भी नहीं था। उसने अपने बैग से पानी की बोतल निकाली और एक बेंच पर बैठ कर बोतल के ढक्कन से बच्ची को पानी पिलाया। तब जाकर कहीं बच्ची थोड़ी चुप हुई। काजल ने बोरे को अच्छे से खोल कर बच्ची के बदन को निहारा कहीं कोई चोट तो नहीं लगी, किसी ने बच्ची को मारा तो नहीं। सब अच्छे से देखने के बाद उसने बच्ची को अपने दुपट्टे में लपेटा और गंदे से बोरे को फेंक दिया।

काजल के जेहन में एक ही विचार आ रहा था कि अब आगे क्या किया जाए? वह बच्ची का क्या करे? अस्पताल या पुलिस स्टेशन? पुलिस स्टेशन जाएगी तो पुलिस के हजारों सवाल, क्या करे? क्या वह भी इसे यहीं-कहीं छोड़ दे! जैसी स्थिति में वह मिली थी। वह उन्हीं सवालों की उधेड़बुन में फँसी थी, तभी घड़ी ने दस बजने का घंटा बजाया। उसके पास सोचने के लिए भी ज्यादा समय नहीं था। 15 मिनट बाद घर जाने वाली लास्ट ट्रेन भी निकल जाएगी, वह करे तो क्या करे?

दिमाग में हजारों सवाल घूम रहे थे, पर जवाब शायद एक भी नहीं। कुछ ही पल में उस बच्ची से ऐसा लगाव हो गया था कि जैसे उसने ही उस बच्ची को जन्म दिया हो। घर पर भी कोई उसे समझने वाला नहीं था और ना ही उसे सपोर्ट करने वाला था। काजल परेशान हो रही थी कि क्या करे, पर किसी भी हालात में वह बच्ची को यहाँ छोड़ना नहीं चाहती थी। घर पर भी उसे ले कर जाना आसान नहीं था। सभी उसके ऊपर चिल्लाने लगेंगे, सौ बातें कहेंगे और उसे अनाथ आश्रम में छोड़ आने को कहेंगे।

बीते हुए 5 साल उसके मानस पटल पर चलचित्र की तरह उभर आए। खुशहाल शादी-शुदा जिंदगी थी, बेहद

प्यार करने वाला पति और सास-ससुर। दो साल के बाद वह भी माँ बनने वाली थी, वह बहुत खुश थी और उसने यह बात घर में बताई। तब जो बात उसके सामने आयी, उससे उसके पैरों तले जमीन खिसक गयी। सास ने कहा कि यह पता किया जाए कि बेटा ही है ना? सास-ससुर को पोता ही चाहिए था। उसके लिए वो कुछ भी कर सकते थे। काजल का पति भी अपने माँ बाप की हाँ में हाँ मिला रहा था। उसने भी काजल को बच्चे का लिंग पता करवाने को कहा। काजल ने समझाने की बहुत कोशिश की मगर उसकी सुने कौन?

ना चाहते हुए भी काजल को बच्चे की लिंग जांच करवाने जाना पड़ा और पता चला कि उसके गर्भ में लड़की है। अब किसी को बच्चा नहीं चाहिए था। ना पति को, ना ही सास-ससुर को। सब हाथ धोकर काजल के पीछे पड़ गए, बच्चा हटाने के लिए। काजल बहुत रोई, गिड़गिड़ाई मगर कोई नहीं माना और जबरदस्ती उसके अजन्मे बच्चे को मार दिया गया।

उसके बाद भगवान ने उसे कभी माँ नहीं बनाया। किसी और की गलती की सजा काजल को मिली। यह सब सोचते-सोचते कुछ मिनट और बीत गए, तभी काजल के चेहरे पर दृढ़ता की लकीरें दिखाई दीं। उसने अपने दुपट्टे में उस बच्ची को अच्छे से लपेटा और बेंच से उठ गयी। सामने से उसकी ट्रेन आते नजर आयी। उसने दूसरे हाथ से अपना बैग उठाया और बच्ची को गोद में लेकर अपने डिब्बे की तरफ बढ़ गयी।

अमानत

राजेश कुमार सिंह
मुख्य प्रबंधक
अहमदाबाद मुख्य शाखा

छोड़ जाओ....
वो बक्सा... और तमाम किताबें.....
जिनके अन्दर कैद गुलाब की पत्तियों में
बसी है लाल पीली नीली सुनहली यादें.....

कुछ खत....
जिनकी खुश्बू से जेहन अभी भी महकता रहता है.....
स्टूडियो में खिंचायी फोटो
भले ही ब्लैक एंड व्हाइट थी
पर जीवन रंगीन था

अब फोटो तो रंगीन है
पर जिंदगी काली सफेद है

मेरे लिए....
लिखी कविता को न जाने कितनी बार चूमा है मैंने....

यकीन मानों.....
इन्हीं वजहों ने मुझे जिन्दा रखा है
ताकि तुम्हारी वापसी पर
अमानत वापस कर सकूं.....

राजेश कुमार सिंह
मुख्य प्रबंधक
अहमदाबाद मुख्य शाखा

प्रेम पत्र

पूरे जंगल में कानाफूसी हुई....
देखते देखते पशु पक्षी नाचने लगे...
नदी खुश हुई भोजपत्र प्रेयसी तक तैराकर...

पेड़ पौधों ने आंखे बंद कर ली...
नायिका का चेहरा सुर्ख होते ही...

इस तरह भोजपत्र प्रमाण बना
युगल के प्रथम प्रेम पत्र का

और प्रकृति ने गवाही दी
नायिका के रोम रोम गेरुआ होने की

आज़ादी का अमृत महोत्सव

मेरे जीवन की अविस्मरणीय यात्रा

पंकज गर्ग
प्रबंधक (योजना एवं विकास)
इंडियन बैंक, अंचल कार्यालय,
दिल्ली दक्षिण

हम सबके जीवन में कुछ ऐसी घटनाएँ, यादें होती हैं जो हमारे अन्तर्मन से ऐसे चिपक जाती हैं कि कभी मिटती नहीं हैं। ऐसी ही एक याद मेरी भी है जो अमिट है और वो है मेरी पहली नौकरी का लगना और उसके लिए दिल्ली जो कि दिलवालों का शहर कहा जाता है वहाँ से निकलकर कुंभनगरी इलाहाबाद (अब प्रयागराज) के एक छोटे से कस्बे राजापुर पहुँचना। यह सफर जितना कठिन था, उतना ही रोचक भी था। वह दिन था, 10 जुलाई 2011 और हाथ में था, इलाहाबाद बैंक का नियुक्ति पत्र, सभी तैयारियां हो चुकी थीं। रात की ट्रेन से इलाहाबाद जाने का रिजर्वेशन भी हो चुका था। तभी शाम को एक खबर आती है कि दिल्ली-इलाहाबाद रेल मार्ग पर दो ट्रेनों की भिड़ंत हो गयी है और पूरा रेल मार्ग बाधित हो गया है। दिल्ली-इलाहाबाद मार्ग की सारी ट्रेने रद्द कर दी गयी हैं जिसमें मेरी ट्रेन भी रद्द हो गयी थी। बहुत प्रयासों के बाद एक ट्रेन में रात्रि 11 बजे का आरक्षण मिला जिससे अगले दिन सुबह मुझे इलाहाबाद पहुँचना था। ट्रेन अपने समय से दिल्ली के नई दिल्ली रेलवे स्टेशन से निकल गयी और क्योंकि आधी रात हो चुकी थी, मैंने भी सोने का निर्णय किया और अपनी निर्धारित बर्थ पर सो गया। सुबह जब आँख खुली तो पता चला कि रूट बाधित होने की वजह से ट्रेन बहुत ज्यादा देरी से चल रही है और अभी कानपुर भी नहीं पहुंची है क्योंकि आज का दिन 11 जुलाई 2011 था तो किसी भी तरीके से मुझे इलाहाबाद स्थित इलाहाबाद बैंक के मंडल कार्यालय पहुँचना ही था। नहीं तो मेरा नियुक्ति पत्र भी निरस्त हो सकता था। बहुत इंतजार के बाद और धीरे-धीरे सरकते हुए ट्रेन 12 बजे के आसपास कानपुर स्टेशन पहुँचती है और यह जानकारी मिलती है कि रेल रूट बाधित होने के कारण ट्रेन इलाहाबाद न जाकर लखनऊ के लिए डाइवर्ट की जा रही है। ऐसे में मैंने ट्रेन से उतर कर किसी और माध्यम से इलाहाबाद पहुँचना उचित समझा। स्टेशन से निकलकर बस स्टैंड पहुँच कर पता चला कि लगभग 2 घंटे बाद इलाहाबाद के लिए एक बस है जो लगभग रात्रि 8 बजे इलाहाबाद पहुंचाएगी। क्योंकि ऑफिस बंद होने से पहले रिपोर्टिंग करना जरूरी था अत: बस से जाना और इंतजार करना मुनासिब नहीं था। रिक्शे की मदद से, मैने प्राइवेट टैक्सी लेकर इलाहाबाद का सफर किया जो कि लगभग 5 घंटे में पूरा हुआ और लगभग 6 बजे के आसपास मैं इलाहाबाद के सिविल लाइंस स्थित इलाहाबाद बैंक के मंडल कार्यालय पहुंचा। पहुँचने पर आज होने वाली नियुक्तियों का साक्षात्कार चल ही रहा था क्योंकि सबको आगे दी जाने वाली तैनाती का ब्यौरा दिया जा चुका था। मेरी भी कागजी कार्रवाई पूरी होने पर कुछ देर के बाद मुझे अब अपनी शाखा की जानकारी और नियुक्ति पत्र प्रदान किया गया वो भी राजापुर शाखा जो चित्रकूट जिले में और इलाहाबाद शहर से लगभग 3 घंटे की दूरी पर स्थित थी। जानकारी पर पता चला कि मानसून के कारण बरसाती नदी की वजह से इलाहाबाद से चित्रकूट के लिए बस मार्ग प्रभावित है और इलाहाबाद से कौशांबी जिले से होते हुए ही शाखा में पहुँचना संभव है।

रात इलाहाबाद में ही रहने वाले एक दोस्त के यहाँ बिताई गई और यह जानकारी थी कि कौशांबी के लिए सुबह की बस से आगे के सफर पर निकलना होगा।

सुबह 6:30 बजे की बस के लिए दोस्त से विदा लेते हुए इलाहाबाद बस स्टैंड पहुँच गया। बस अपने निर्धारित समय पर कौशांबी जिले के लिए रवाना हो गयी। लगभग 3 घंटे के सफर के बाद बस अपने गंतव्य स्थान महेवाघाट पर आकर खड़ी हो गयी जिसके बिलकुल ठीक सामने इलाहाबाद बैंक की महेवाघाट शाखा नजर आ रही थी। शाखा में साफ सफाई का काम चल रहा था। शाखा में उपस्थित कर्मचारी ने बताया कि 10 मीटर की दूरी पर यमुना नदी बह रही है जिसके दूसरी तरफ मेरा गंतव्य स्थान राजापुर है और जहां पहुँचने के लिए मुझे स्टीमर का उपयोग करना होगा। शायद यही एकमात्र साधन रह गया था जिसका उपयोग करना बाकी रह गया था। कर्मचारी ने मुझे यमुना नदी के पार तक जाने का रास्ता बताया और मैं उसकी तरफ चल पड़ा। नदी किनारे पहुँचने पर जैसा बताया गया था एक स्टीमर सभी सवारियाँ भरने में लगा हुआ था जिन्हें नदी के दूसरे किनारे पहुँचना था। वैसा ही एक स्टीमर नदी के दूसरे किनारे पर भी नजर आ रहा था। कुछ देर के बाद हमारा स्टीमर भी धीरे-धीरे नदी के इस किनारे से दूसरे किनारे की तरफ चलने लगा और लगभग 10 मिनट बाद दूसरे किनारे पर पहुँच गया। स्टीमर से उतरने के बाद घाट से रास्ता राजापुर कस्बे की सब्जी मंडी में प्रवेश करता है। इसी सब्जी मंडी के बीचों बीच स्थित है इलाहाबाद बैंक की राजापुर शाखा। राजापुर शाखा में प्रवेश करते ही मेरी एक कठिन पर अविस्मरणीय यात्रा का अंत होता है।

हमारा बैंक - इंडियन बैंक

भवेश शंकर गुप्ता
वरिष्ठ प्रबंधक (सुरक्षा)
अंचल कार्यालय, बेंगलूरू

इंडियन बैंक है अपना बैंक,
जो करता है जन-जन की सेवा
चाहे अमीर हो या गरीब।।

सबकी करता है यह दिल से सेवा
आजादी के दिन से जिसकी हुई थी शुरुआत।
तब से इसने ना रुकने का नाम लिया
ना ही थकने का नाम लिया।।

चाहे जन-धन हो या हो एपीवाई,
चाहे हो होम लोन या कोई अन्य लोन।
यह निरन्तर देता रहा अपनी सेवा जनता को
और प्यार पाता रहा प्राणीजन का हर पल।।

फिर इलाहाबाद बैंक से मिलने पर
इसने की अपनी ताकत दोगुना,
और बढ़ने लगा निरन्तर प्रगति पथ पर।।

अपने देश में ही नहीं विदेशों में भी हैं शाखाएं
चहूं ओर अपनी प्रगति के इसने पंख फैलाए
हमारी दुआ है कि हमारा बैंक ऐसे ही प्रगति करता रहे
और एक दिन देश का सर्वोच्च बैंक बन जाए।।

वक्त बदल रहा है : मिथ्या या सत्य

विष्णु कुमार प्रजापति
प्रबंधक
आरएपीसी उदयपुर

वक्त बदल रहा है, अक्सर सुनाई देती है यह बात, हर जगह, हर समय और न जाने कितनी ही बार, पर क्या वाकई ऐसा है? "मुझे तो नहीं लगता, क्योंकि मैंने कई बार इस भ्रम को टूटते हुए देखा है।" मेरे दैनिक जीवन में ऐसे कई वाकिये हुए है जिनसे इस बात की पुष्टि हो जाती है ....

एक दिन मेरे पड़ोस के घर में नई बहू का आगमन हुआ पूरा घर उसके स्वागत में आतुर हो रहा था, सास ससुर नई बहू को आशीर्वाद दे रहे थे, ननद अपनी भाभी को अपनी सहेली के रूप में देखकर फूली नहीं समा रही थी और देवर को तो जैसे अपनी छोटी माँ ही मिल गयी थी। पूरा मोहल्ला बहू के मनोहर रूप की प्रशंसा करते थक नहीं रहा था। सभी कह रहे थे बहू अपने साथ दहेज में बहुत सी चीजे लेकर आई है। उसके पिता ने बारात का बहुत अच्छा स्वागत किया और बारातियों को अच्छे उपहार भेंट किये और ना जाने कितनी ही बातें...नई बहू काफी पढ़ी लिखी थी और उससे भी ज्यादा संस्कारी, जिसे उसके पिता और माँ ने बहुत ही लाड-प्यार से पाला था और विदा करते हुए अपने ससुराल वालों को अपने परिवार के समान समझने की सीख दी थी। इस परिवेश में उसे भी बहुत खुशी मिल रही थी। पीहर से जुदा होने का दर्द इन बातों से मुस्कुराहट में बदल रहा था।

दिन गुजर रहे थे, सब अच्छा चल रहा था, ससुराल में खुशिया अपने पैर पसारे हुए थी। देखते ही देखते घर में नन्हे मेहमान का आगमन हुआ, दादा दादी अपनी नन्हीं पोती को देखकर बहुत खुश थे। वे अपनी बहू को बहुत धन्यवाद दे रहे थे। चाचा और बुआ तो अपनी भतीजी के साथ खेलने के लिए उसे नींद से भी उठा दिया करते थे। इसी खुशी के सिलसिले में एक और लम्हा जुड़ गया जब बहू की नौकरी लग गयी, खुशियों के आँचल तले दो वर्ष बीत गए पर कहते हैं न कि सुख और दुःख जीवन रूपी सिक्के के दो पहलू होते हैं, सुख जाता है तब दुःख आता है ...

अब समय आ गया था जब परिवार की बहू धीरे-धीरे बेटी से बहू समझी जाने लगी थी, पहले जब कभी उससे कामकाज के समय कोई गलती होती थी तो उसे बड़े प्यार से सुधार दिया जाता था पर अब न जाने क्या हो गया कि उसकी छोटी सी भूल पर उसके माता पिता को दोषी समझा जाने लगा। कमी तो पहले भी थी पर आज ऐसा क्या हो गया? सब समझ का फेर है! घर की बेटी चाहे सुबह देर तक सोती रहे, उसे कोई कुछ नहीं कहता पर किसी कारण अगर बहू देर से उठे तो उसे ताने दिए जाते हैं, उसे खुलकर हंसने का भी अधिकार नहीं, बहू नौकरी पर जाती है और घर भी संभालती है पर उसे कोई यह नहीं कहता की बेटा थोड़ा आराम कर और ऐसे में अगर उसने आराम कर लिया तो जैसे कोई संकट आ गया। कभी-कभी तो उसे गालियां भी दी जाती हैं पर वो कुछ नहीं कहती। उसे हर समय अपने माता-पिता के संस्कार याद आते हैं, वो रातों को छुप-छुप कर रोती है पर अपना दर्द किसी से नहीं कहती क्योंकि उसे अपना दुःख बांटने का भी अधिकार नहीं है। चाहे उसकी बुराई सासू माँ पूरे मोहल्ले में करे पर उसे तो सांस लेने के लिए भी मर्यादा का पालन करना पड़ता है।

किस्मत से उसका पति उसे समझता है क्योंकि उसकी सोच नए जमाने की है। वो अपनी पत्नी के दु:ख को अपनी बेटी के आगामी जीवन से जोड़कर देखता है। उसे लगता है कि दुनिया में हर इंसान को समान रूप से जीने का अधिकार है परन्तु उसकी यह सकारात्मक सोच समाज और उसके परिवार को चुभती है। उसे जोरू का गुलाम समझा जाता है केवल इसलिए कि वह उसकी पत्नी को समझता है और उससे प्रेम करता है। इन सभी बातों से ये तो स्पष्ट हो जाता है कि हम अपने बच्चों को चाहे कितनी ही उच्च शिक्षा दिला दें पर उनसे यही अपेक्षा होती है कि वे रूढ़िवादी सोच को बढ़ावा दे। पुराने और घिसे-पिटे रिवाजों को अपनाए, नयी और सकारात्मक सोच से दूर रहे। अपनी बेटी के लिए हर माता-पिता को राजकुमार चाहिए जो उसे पलकों पर बिठाए लेकिन मैं पूछता हूँ कि यही सोच वो अपनी बहू के लिए क्यों नहीं रखते? क्या हमने अपने घरों में इस प्रकार का माहौल देखा है और अगर ऐसा है तो क्या हमने उसे सुधारने की कोशिश की है। यदि हां, तो हमने अपनी शिक्षा को साकार किया है और यदि ऐसा नहीं है तो क्या हमें सुलझे हुए व्यक्तित्व का परिचय नही देना चाहिए? वो कहते हैं ना कि अगर सच्ची निष्ठा से किसी कार्य को करने की सोचें तो उसे पूरा किया जा सकता है। अगर शिक्षित व्यक्ति बदलाव की सोचेगा तो परिवार का वातावरण भी सुधरेगा। शादी से पहले बेटा, बेटा रहता है और शादी के बाद वो बदल जाता है। बहू कभी बेटी नहीं बन सकती, ऐसी अपंग मानसिकता को बदलने की जरूरत है। यह एक घर की नहीं बल्कि हर घर की कहानी है और इसे समय से सुधारना आवश्यक है। हमारे शास्त्र भी कहते हैं "यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता" अर्थात जहां स्त्री का सम्मान होता है। वहां देवता भी निवास करते हैं, क्या हमारा यह दायित्व नहीं कि हम अपनी सोच और अपने व्यवहार से इसे चरितार्थ करें। यह समय है बदलाव का, आओ मिलकर इसे सफल बनाएँ।

दिल के अरमान

कुंज बिहारी सिंह
प्रबंधक
अंचल कार्यालय, सतना

चाहत थी, भरपूर जीने की जिंदगी को, लेकिन,
जिंदगी के सफर में कुछ लम्हा कट गया लगता है।
जिसे समझा था निज भाग साहब,
वो भी दुनिया-दारी में बट गया लगता है।

इस दुनिया की चका-चौंध के मारे,
बन बैठा था, खाबों का सौदागर,
लेकिन, जब नींद खुली तो,
हाथों से बहुत कुछ छूट गया लगता है।

कार्यलक्ष्य को पाने की भाग दौड़ में,
ऐ कुंज, मैं ऐसा हुआ मसरूफ कि,
मेरा रब मुझ से रूठ गया लगता है।

रखने को दिल दूसरों का,
मैं खुद से हुआ यों दूर कि,
मुझसे ही मेरा रिश्ता टूट गया लगता है।

अब तो बस यह अरमान है साहब,
चुन कर मुठ्ठी भर खुशियों को, इस रंजोभरे जहां से,
सजा लो अपने सपनों का आशियां
बस यही बात यह दिल भी, दिन-रात रटता है।

माइक्रोसॉफ्ट एक्सेल- एक बहुआयामी टूल

आशीष राणा
मुख्य प्रबंधक
जोखिम प्रबंधन विभाग
कॉर्पोरेट कार्यालय, चेन्नै

बैंकिंग और फाइनेंस के क्षेत्र में डेटा से संबंधित बहुत अधिक कार्य होता है। इस संदर्भ में कार्य को सरल बनाने के लिये 'एक्सेल' में कई सुविधाएं उपलब्ध हैं- शार्ट कट के अतिरिक्त सूत्रों (फॉर्मूलों) की जानकारी भी आवश्यक है। फॉर्मूलों की सहायता से 'एक्सेल' में सृजित मॉडल स्वचालित एवं गतिशील बनाएं जा सकते हैं। बैंकिंग और फाइनेंस में रोजाना ही स्प्रैडशीट्स जैसे कि माइक्रोसॉफ्ट एक्सेल पर घण्टों कार्य करने की आवश्यकता पड़ती है। थोड़े अनुभव और जानकारी होने से इन कार्यों को तेज गति तथा आसान तरीके से पूर्ण किया जा सकता है। माइक्रोसॉफ्ट एक्सेल एक अत्यंत उपयोगी साधन है तथा इसमें अनेक उपयोगी फॉर्मूलें हैं।

इस लेख के माध्यम से हमारा प्रयास हैं कि कुछ महत्वपूर्ण एवं नियमित तौर पर उपयोग में आने वाले फॉर्मूले सीख सकें।

सूत्र (फॉर्मूला) - VLOOKUP

यह फॉर्मूला 'एक्सेल' में सर्वाधिक उपयोग में आने वाले फॉर्मूलों में से एक है। अधिकतर डेटा तालिका (टेबल) के रूप में उपलब्ध होता है। हर टेबल में कई पंक्तियां (कॉलम एवं रो) होती हैं। किसी तर्क के आधार पर एक टेबल से डेटा लेकर दूसरे किसी सेल में उपयोग करने के लिये यह फॉर्मूला बहुत प्रभावी है। एक कृत्रिम उदाहरण के द्वारा इसे समझने का प्रयास करते हैं।

मान लीजिए, चित्र 1 में दिखाए गए अनुसार डेटा सेल D3 से सेल H11 के बीच टेबल के रूप में स्थित या उपलब्ध है और आवश्यकता है कि सेल B4 के अनुरूप, इस टेबल से डेटा सेल B5 से सेल B7 तक आ जाए। ऐसी स्थिति में हमें सेल B5 से सेल B7 में VLOOKUP फॉर्मूलों का प्रयोग चित्र 2 में दर्शाए गए अनुसार करना चाहिए। इसे विस्तार से आगे समझाया गया है।

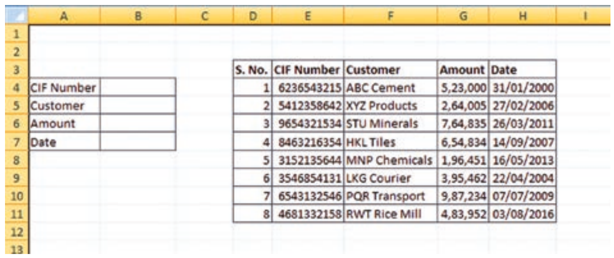

	A	B	C	D	E	F	G	H	I
1									
2									
3				S. No.	CIF Number	Customer	Amount	Date	
4	CIF Number			1	6236543215	ABC Cement	5,23,000	31/01/2000	
5	Customer			2	5412358642	XYZ Products	2,64,005	27/02/2006	
6	Amount			3	9654321534	STU Minerals	7,64,835	26/03/2011	
7	Date			4	8463216354	HKL Tiles	6,54,834	14/09/2007	
8				5	3152135644	MNP Chemicals	1,96,451	16/05/2013	
9				6	3546854131	LKG Courier	3,95,462	22/04/2004	
10				7	6543132546	PQR Transport	9,87,234	07/07/2009	
11				8	4681332158	RWT Rice Mill	4,83,952	03/08/2016	
12									
13									

चित्र 1 (उपलब्ध कृत्रिम डेटा)

VLOOKUP फॉर्मूलों से अपेक्षित रूप से परिणाम प्राप्त करने के लिये 4 मापदंडों की आवश्यकता होती है। ये चारों मापदंड फॉर्मूलों में अर्ध विराम (कौमा) के अंतर से पृथक-पृथक एवं एक विशेष अनुक्रम में लिखे जाते हैं। VLOOKUP (lookup_value, table_array, col_index_num, [range_lookup])

पहला मापदंड (lookup value) वह सेल है जिसके अनुरूप या जिससे संबंधित डेटा की हमें आवश्यकता है। यह सेल उदाहरण में B4 है।

दूसरा मापदंड (table_array) वह क्षेत्र है (उदाहरण में सेल E4 से सेल H11 तक) जहाँ से हमें डेटा को लेना है। यहाँ एक ध्यान रखने योग्य महत्वपूर्ण बात यह है कि VLOOKUP फॉर्मूला, प्रथम मापदंड को हमेशा चयनित क्षेत्र के प्रथम कॉलम (इस उदाहरण में

कॉलम E) में ही खोजने का प्रयास करता है। इसलिए दूसरे मापदंड के लिये क्षेत्र को चुनते समय हमें कॉलम D को नहीं चुनना चाहिए अन्यथा फॉर्मूला अपेक्षित परिणाम नहीं दे पायेगा।

	A	B	C	D	E	F	G	H
1								
2								
3				S. No.	CIF Number	Customer	Amount	Date
4	CIF Number	9654321534		1	6236543215	ABC Cement	5,23,000	31/01/2000
5	Customer	=VLOOKUP(B4,E4:H11,2,0)		2	5412358642	XYZ Products	2,64,005	27/02/2006
6	Amount	=VLOOKUP(B4,E4:H11,3,0)		3	9654321534	STU Minerals	7,64,835	26/03/2011
7	Date	=VLOOKUP(B4,E4:H11,4,0)		4	8463216354	HKL Tiles	6,54,834	14/09/2007
8				5	3152135644	MNP Chemicals	1,96,451	16/05/2013
9				6	3546854131	LKG Courier	3,95,462	22/04/2004
10				7	6543132546	PQR Transport	9,87,234	07/07/2009
11				8	4681332158	RWT Rice Mill	4,83,952	03/08/2016
12								
13								

चित्र 2 (VLOOKUP फॉर्मूलों का प्रयोग)

तीसरा मापदंड (col_index_num) चयनित क्षेत्र में उस कॉलम का अनुक्रमांक है जहाँ अपेक्षित या इच्छित डेटा उपलब्ध है। इस उदाहरण में चयनित क्षेत्र में प्रथम अनुक्रमांक (क्रमांक 1) कॉलम E का है। इसके बाद से दाहिनी ओर एक एक अनुक्रमांक बढाते हुए हम कॉलम गिन सकते हैं। हमारे चयनित क्षेत्र में क्रमांक 2 - कॉलम F, क्रमांक 3 - कॉलम G, क्रमांक 4 - कॉलम H का है। इसलिए हमने सेल B5 से सेल B7 तक आवश्यकता अनुसार क्रमांक 2 से 4 तक का उपयोग किया है।

चौथा और अंतिम मापदंड ([range_lookup]) केवल 0 या 1 ही हो सकता है। अधिकतर स्थितियों में 0 का ही उपयोग करना होता है। इस मापदंड में 1 का प्रयोग करने से 'एक्सेल' पहले मापदंड का अनुमानित मिलान कर परिणाम देता है ना कि शुद्ध मिलान कर।

VLOOKUP फॉर्मूला, केवल दाई ओर ही डेटा की खोज (lookup) कर सकता है, इसलिए जिस मापदंड के अनुरूप हमें डेटा चाहिए, वह मापदंड हमेशा चयनित क्षेत्र के प्रथम कॉलम में ही होना चाहिए।

	A	B	C	D	E	F	G	H
1								
2								
3				S. No.	CIF Number	Customer	Amount	Date
4	CIF Number	9654321534		1	6236543215	ABC Cement	5,23,000	31/01/2000
5	Customer	STU Minerals		2	5412358642	XYZ Products	2,64,005	27/02/2006
6	Amount	7,64,835		3	9654321534	STU Minerals	7,64,835	26/03/2011
7	Date	26/03/2011		4	8463216354	HKL Tiles	6,54,834	14/09/2007
8				5	3152135644	MNP Chemicals	1,96,451	16/05/2013
9				6	3546854131	LKG Courier	3,95,462	22/04/2004
10				7	6543132546	PQR Transport	9,87,234	07/07/2009
11				8	4681332158	RWT Rice Mill	4,83,952	03/08/2016

चित्र 3 (परिणाम)

आशा करता हूँ कि इस कॉलम में दी गई जानकारी आपके लिए उपयोगी साबित होगी।

दरवाजे

भारती प्रधान
वरिष्ठ प्रबंधक
क्षेत्र महाप्रबंधक कार्यालय, मुंबई

पहले दरवाजे नहीं खटकते थे...
रिश्तेदार, मित्र सम्बंधी
सीधे पहुँच जाते थे
रसोई तक वहीं जमीन पर बैठ
गरम पकौड़ियों के साथ
ढेर सारी बातें, सुख-दु:ख का
आदान-प्रदान।
फिर खटकने लगे दरवाजे,
मेहमान की तरह
रिश्तेदार, बैठाये जाने लगे बैठक में
नरम सोफों पर कांच के बर्तनों में
परोसी जाने लगी घर की शान
कांच के गिलास में
मीठे शरबत, पिलाई जाने लगी.. हैसियत।
धीरे-धीरे बढ़ने लगा स्व का रूप..
मेरी जिंदगी -
मेरी मर्जी -
अपना कमरा -
अपना मोबाइल -
अपना लैपटॉप -
पर कहीं न कहीं
स्नेहपेक्षी मन
प्रतीक्षारत है,
किसी अपने का..!!!
पर अब.....दरवाजे नहीं
खटकते हैं ..!!!

ब्लॉकचेन क्या है

निशांत बंसल
वरिष्ठ प्रबंधक
एफएक्ससीपीसी, मुंबई

भोलूराम : गुरूजी, ब्लॉकचेन के बारे में कुछ बतायें।

गुरूजी : ब्लॉकचेन भी डेटाबेस जैसा होता है। यह कई ग्रुप के तहत जानकारी इकट्ठा रखता है। इन ग्रुप्स को ब्लॉक कहते हैं और ये ब्लॉक कई दूसरे ब्लॉक से जुड़े होते हैं, जो एक तरीके के डेटा की चेन बनाते हैं। इसीलिए इस प्रक्रिया को ब्लॉकचेन कहते हैं।

गुरूजी : शाबाश।।
यह शाबाश उनके लिए है जिनको ऊपर लिखित व्याख्या समझ आ गयी है।

भोलूराम : पर गुरूजी मुझे तो कुछ भी समझ नहीं आया।

गुरूजी : मुझे पता था, भोलू कि तू मेरा सच्चा शिष्य है। लेकिन पहले यह बता कि जो तुम्हारी कक्षा मे शकुनि नाम का विद्यार्थी है, सुना है उसने गणित के अध्यापक की प्रधानाचार्य महोदय से शिकायत की थी।

भोलूराम : जी गुरुजी शिकायत तो की थी।

गुरूजी : विषय क्या था, शिकायत का?

भोलूराम : गणित के अध्यापक ने परीक्षा में शकुनि का एक उत्तर गलत किया। शकुनि ने प्रधानाचार्य जी से बोला की हमें ऐसा ही पढ़ाया गया है। उसने अपनी नोटबुक भी दिखाई जिसमें गलत बताया गया था।

गुरूजी : ओह ! तो मास्टर जी ने गलत पढ़ाया था?

भोलूराम : ऐसा नहीं है गुरूजी।

गुरूजी : तो फिर कैसा है?

भोलूराम : प्रधानाचार्य जी ने सभी छात्रों की नोटबुक चेक की और पाया कि शकुनि ने ही गलत लिखा था। बाकी सब छात्रों ने उत्तर सही लिखा था। जब प्रधानाचार्य जी ने विश्लेषण किया तो पाया कि शकुनि ने ही कपट दिखाते हुए, बाद मे अपनी नोटबुक में उत्तर बदल दिया। अभी कल शकुनि को इस बात का दंड मिलेगा।

गुरूजी : सही है। जैसे को तैसा मिलना ही चाहिए।

भोलूराम : पर गुरुजी आपने मेरे प्रश्न का उत्तर नहीं दिया।

गुरूजी : हाँ, हाँ, बताता हूं। नहीं तो तुम मेरी शिकायत कर दोगे श्रीमान प्रधानाचार्य महोदय से

भोलूराम : अरे नहीं गुरूजी, मैं शकुनि जैसा नहीं हूँ। आप मुझे ब्लॉकचेन थोड़ा विस्तार में बताएँ।

गुरूजी : तो सुनो, सरल भाषा में ब्लॉकचेन बिलकुल तुम्हारे नोटबुक जैसा है। नोटबुक का एक एक पन्ना एक ब्लाक है। जब कोई भी लेन देन अथवा कोई अनुबंध किया जाता है, तो वो कई लोगों (कंप्यूटर) के द्वारा दर्ज कर लिया जाता है। इस तरह अगर कोई भी अपने एक कंप्यूटर को दूषित करता है तो बाकी के कंप्यूटर में डाटा सुरक्षित रहता है। यह बिलकुल वैसे ही काम करता है जैसे कि शकुनि ने अपनी नोटबुक में छेड़खानी की तो प्रधानाचार्य महोदय ने पकड़ लिया तो ब्लॉकचेन से हमें एक ऐसी व्यवस्था मिलती है जिसमें कोई छेड़छाड़ संभव नहीं है। इसी खूबी को देखते हुए इसे बैंकिंग में, इन्शुरेन्स में व अन्य जगह जहाँ डाटा की सुरक्षा अहम है, वहां इस्तेमाल किया जाता है।

भोलूराम : यह तो बहुत ही दिलचस्प चीज है। पर मुझे एक बात समझ नहीं आई

गुरूजी : क्या बात समझ नहीं आई?

भोलूराम : आपने कहा कि यह व्यवस्था हमारे डाटा को सुरक्षित रखती है परन्तु हमारा डाटा तो सब लोगों के पास है और सब लोग इसे देख सकते हैं फिर यह सुरक्षित कैसे हुआ?

गुरूजी : बहुत ही अच्छा प्रश्न किया भोलूराम, तुम्हारी इसी तीव्र बुद्धि के कारण तुम मेरे प्रिय शिष्य हो।

भोलूराम : गुरूजी, मैं तो आपका ही अनुकरण करता हूँ। जैसा गुरु वैसा चेला।

गुरूजी : भोलू, मान लो कि एक कक्षा में 40 छात्र हैं जो कि डेटाबेस को दर्ज करते हैं, अब अगर डेटाबेस दर्ज करने से पहले एन्क्रिप्ट (encrypt) कर दिया जाये और उसको वही पढ़ सके जिसके पास उसका पासवर्ड हो। अगर ऐसा हो जाये तो डाटा तो सबके पास होगा पर उसको पढ़ने की क्षमता सबके पास नहीं होगी और अगर कभी किसी ने डाटा का पासवर्ड चोरी करके डाटा पढ़ भी लिया तो उसे बदल नहीं पायेगा क्यूंकि बाकी सब जगह तो असल डाटा दर्ज ही है। ऐसे में उसका बदलाव खारिज हो जायेगा व उसको दंड मिलेगा जैसा कि शकुनि को मिलेगा।

भोलूराम : गुरूजी यह तो आपने बहुत ही बढ़िया बात बताई। परन्तु मेरा एक और प्रश्न है?

गुरूजी : कोई भी प्रश्न नि:संकोच पूछो।

भोलूराम : प्रश्न यह है कि अगर यह ब्लॉकचेन बैंकों में लागू होती है और किसी तरह 40 के 40 लोगों को मना लिया जाये और सभी के सभी डाटा बदल दें तो इससे तो व्यवस्था बिगड़ जाएगी व बहुत नुकसान होगा।

गुरूजी : मैं जानता था भोलूराम कि कपटी तो तुम भी कम नहीं हो। मन ही मन तुम षड्यंत्र रचते हो...

भोलूराम : नहीं नहीं, गुरूजी ऐसा नहीं है। किसी भी कार्यशैली को अपनाने से पहले उसके गुण दोष जाँच कर लेने चाहिए। अन्यथा बाद में जब चिड़िया खेत चुग जाएगी तो पछताना पड़ेगा। अब मेरा प्रश्न स्वाभाविक नहीं है क्या?

गुरूजी : प्रश्न तो सौ फीसदी स्वाभाविक है। तभी तो तुम मेरे प्रिय शिष्य हो। अब मान लो कि डाटा दर्ज करने वाले कंप्यूटर नोड (computer Node) केवल एक स्थान पर बैठे 40 छात्र नहीं हैं अपितु पूरी दुनिया में फैले करोड़ों कंप्यूटर हैं जो कि इन्टरनेट के माध्यम से जुड़े हैं। अब बताओ क्या सबको एकसाथ मना लेना संभव है?

भोलूराम : कदापि संभव नहीं है। लेकिन एक प्रश्न और है जो मुझे विचलित कर रहा है?

गुरूजी : भोलूराम अपने सारी चिंता का निवारण कर लो अन्यथा मैं जानता हूँ कि तुम सो नहीं पाओगे।

भोलूराम : यह डाटा दर्ज करने वाले करोड़ों कंप्यूटर नोड (Computer Nodes) जो पूरी दुनिया में फैले हैं वो भला हमारे लिए यह काम क्यूँ करेंगे। हम क्या उन्हें वेतन देते हैं और अगर वेतन देने लगे तो बचेगा क्या?

गुरूजी : वाह भोलू तुम तो अव्वल दर्जे के व्यापारी भी हो। अब सुनो, मान लो कि कोई नया डाटा आया और उसे हमने दर्ज करवाना है तो उसको दर्ज करने के लिए एक बहुत मुश्किल समीकरण हल करके उसे एनक्रिप्ट करना पड़ता है जिसे हम Hash कहते हैं। करोड़ों लोगों में से जो सबसे पहले समीकरण हल कर देगा, वेतन सिर्फ उसी को मिलेगा बाकि सबको डाटा की प्रतिलिपि दर्ज करनी है।

भोलूराम : वाह गुरूजी, आपने तो इतनी बड़ी व्यवस्था को इतने सरल शब्दों में समझा दिया। लेकिन मैंने सुना था कि ब्लॉकचेन पर BITCOIN व NEFT भी होते हैं। अब यह सब क्या है?

गुरूजी : प्रिय भोलू, आज का ज्ञान यहीं समाप्त करते हैं। BITCOIN व NEFT की चर्चा हम "इंड छवि" के अगले संस्करण में करेंगे।

नोट : अगर पाठकों को मेरी ब्लॉकचेन समझाने की छोटी सी कोशिश पसंद आई हो तो मुझे nishant.bansal@indianbank.co.in पर जरुर बताएं। ब्लॉकचेन जैसा मैंने समझा, वैसा ही प्रस्तुत किया। किसी सक्षम अधिकारी को कुछ त्रुटि लगे तो मुझे जरूर बताएं।

उन्मुक्त

ऋतु दाधीच
ग्रामीण विकास अधिकारी
(आरडीओ)
एमएपीसी उदयपुर

घरौंदे से निकली वो चिड़िया,
अब तक वापस क्यों ना आई,
जिस नीड़ का था साया,
हुई क्यों वो उससे पराई!
चिड़िया से पूछा, वो चहचहाई,
नीड़ में जैसे लाचारी की उमस है,
दास्तां कुछ उसने ऐसी सुनाई,
कि पंख होकर भी वो कितनी बेबस है!
घरौंदे को था जिन तिनकों से बनाया,
अब चुभने लगे हैं,
हसीन ख्वाबों को जो था सजाया,
अब टूटकर बिखरने लगे हैं!
वो बोली, अहमियत थी हर तिनके की,
ये कभी जान न पाई,
मिट गई है घरौंदे की हस्ती ही,
क्यों मैं समझ न पाई!
जब मिली स्वार्थ के उस तिनके से,
निस्वार्थता की गद्दी को मैंने उठा फेंका,
जिंदगी ही मिल गई हो जैसे,
स्वार्थ को मैंने कुछ ऐसे देखा!
रैना गुजरी, दिन थे बीते,
स्वार्थ का तिनका नुकीला होता चला गया,
प्रेम के तिनके थे सब रीते,
नफरत का पानी घरौंदे में भरता चला!
निस्वार्थता की गद्दी अब भी बोली,
यूं ध्वस्त ना होने दो घरौंदे को,
मगर पहनी थी मैंने भी अहंकार की चोली,
बोली, तुम अपना रास्ता देखो!
अरसा बीता, स्वार्थ का नुकीलापन बढ़ा,
स्वाभिमानी से अहंकारी होती चली गई,
नफरत का पानी भी परवान चढ़ा,
और घरौंदे को दूषित मैं करती रही!
सोच रही हूं, एक बार फिर,
नई शुरुआत करूं,
तमाम वासनाओं से गई हूं घिर,
सोचती हूं, घरौंदे में अब नए तिनके भरूं!
तन्मय होकर उस अनंत नभ में,
घरौंदे को भी आसमानी कर दूं,
कि उमस जो थी उसमें,
उसको भी अनंतता की धूप दिखा दूं!

निसर्ग

वृंदा आनंद किनेर
लिपिक
बांद्रा (वेस्ट)

निसर्ग के दम पर है दुनिया खड़ी
निसर्ग की दया है मानव पर बड़ी।
निसर्ग से है सूरज में प्रखरता
निसर्ग से है चंद्रमा में शीतलता।
निसर्ग से है वायु की चंचलता
निसर्ग से है धरती की सुंदरता।
माँ की ममता होती है नैसर्गिक
पिता का स्नेह मिलता है नैसर्गिक।
पति-पत्नी का आकर्षण होता है नैसर्गिक
सुख दुःख की भावना उभरती है नैसर्गिक।
निसर्ग से है जीवन में छाँव और धूप
निसर्ग है ईश्वर का ही एक रूप।

सामंजस्य

रूपाली माहेश्वरी
व.प्रबंधक
अंचल कार्यालय
(पश्चिमी मुंबई)

संसार के मानचित्र पर, जीवन के चलचित्र पर
खुशियों और दुखों के भंवर में फंसा इंसान,
भागता चला जाता है अपनी धुन में
और नहीं देख पाता है उनको,
जिनके चेहरे पर सदा एक सौम्य है विद्यमान।

मृगतृष्णा में भटकता इंसान
नहीं महसूस कर पाता है उन चेहरों की तृप्ति को
जिनके पास अब कुछ खोने को नहीं है शेष।
अपनी ही धुन में वह जीते हैं जिंदगी को क्योंकि
जिंदगी ने कुछ भी छोड़े नहीं हैं उनके अवशेष।।

नहीं डर है उन्हें कुछ चले जाने का
और कुछ पाने पर उसका स्वागत करेंगे वह
विशेष।
संसार का सामंजस्य बैठाएं हैं यही लोग
वरना कब तक रसातल में पहुंच गया होता यह
मानव लोक।।

सड़क

अंकिता श्रीवास्तव
प्रबंधक
गोरखपुर यूनिवर्सिटी शाखा

कहीं लम्बी कहीं चौड़ी
कहीं आधी कहीं पौनी
लहराती चलती हूँ मैं
शहर शहर..... गली गली....

कहीं पत्थर सी कठोर
कहीं माटी सी गुलगुली
कहीं समतल कहीं गड्ढों भरी
हर मुसाफिर की मैं सखी ...मैं सहेली..

कहीं वीरानेपन में हूँ
कहीं सजी दुल्हन सी हूँ
और कहीं भीड़ के कदमों की हूँ
खलबली ...खलबली ....

कहीं धूप में चिलचिलाती
कहीं मृगतृष्णा की भांति
मैं गवाह हूँ हर ऋतु
जो भी आई... जो चली...

हर दिशा से मिली तो बने चौरस्ते
जो रूकावटें मिली तो मुड़ गई हँसते-हँसते
सबकी मंजिल का है जिम्मा
हर पहर... हर घड़ी...

मुझसे गुजरी हैं बारातें और गुजरी मैय्यतें
ना किसी का शुक्रिया न किसी से शिकायतें
बिन रुके बिन थमे... मैं बढी मैं चली...

भूख

प्राची श्रीवास्तव
एकल खिड़की संचालक
शाखा, टूंडला

कुलबुलाती है, बिलबिलाती है,
भूख रोटी के लिए छटपटाती है।
रुलाती है, तड़पाती है,
भूख ही दर दर भटकाती है।।

अजर होती है, अमर होती है,
भूख एक शाश्वत सत्य होती है।
हो बालक, वयस्क या हो बूढ़ा,
भूख समानता का स्तंभ होती है।।

बुजुर्गों के आँसू हो या हो नन्हें बिलखते मासूम,
भूख तो बस लगना जानती है।
हो चाहे हिन्दू मुस्लिम या हो सिक्ख, ईसाई,
भूख धर्म को कहाँ मानती है।।

भूख एक विकट तिजारी है,
पेट की आग सुलगाती है।
खाली पेट पानी पीकर,
फिर नींद कहाँ आती है।।

ठंडी रातों में जेठ सी जलाती है,
गर्मी में सारा बदन झुलसाती है।
भूख तो भूख होती है,
वो कहाँ मरना जानती है।।
क्षुधा मिटाने की खातिर,
पाप भी करवाती है।

रूखा सूखा या हो जूठा,
भूख सब कुछ निगलवाती है।।

मिलेगी कभी सजी हुई भरी थाली,
सोचते हुए भूख कचरा बिनवाती है।
लाचारी देखो, देखो बेबसी उनकी,
भूख एक अनोखी शैरू बन जाती है।।

जब तक आँखों में भूख रहती है,
जिंदगी यूँ ही लड़ती रहती है।
कितनी बेरहम होती है भूख,
क्षुधित को भी मिटा देती है।
पर स्वयं जीवित रहती है।।

भूख हर किसी में होती है।
चाहे अमीरों की हो,
या हो गरीबों की।
फर्क सिर्फ इतना सा है,
दोनों ही भूख में,

कोई धन वैभव को तरसे,
कोई दो निवाले को तरसे।
भूख ना मिटती किसी की,
अमीर भी तरसे, गरीब भी तरसे।।

श्रम को गुनाह कैसे कहूँ

विवेक नारायण
सहायक प्रबंधक
सी ए पी सी, पटना

दो जून का जुगाड़ कैसे करूँ
दिखता जीवन पहाड़ सा
इसको पार कैसे करूँ।
पापा की दवाइयाँ देख
माँ की ममता दिखती है,
चार घरों की झाड़ू में

सिर्फ छुटकी की खुशी दिखती है।
बापू की मेहनत कभी धौकनी में चमकती थी
मुहल्ले की अंगुलियों में जान सी बसती थी,
आग के शोलों में निखर आता था उसका चेहरा
रौशनी की चमक में अब ठहरा भी नहीं रहता।

रात के अँधेरे की कहे कौन
दिन के उजाले भी मुझे सताते हैं

कभी छुटकी, कभी अम्मा
तो कभी बापू याद आते हैं।

बचपन को भूलना मेरी मजबूरी है
अरे यही परिवार तो मेरी धुरी है

निहारते हो जब तुम मुझे अच्छा नहीं लगता
जीवन परिवार खुशी के बीच मैं बच्चा नहीं रहता

श्रम को गुनाह कैसे कहूँ
मुझे अच्छा नहीं लगता।

विवेक नारायण
सहायक प्रबंधक
सी ए पी सी, पटना

मैं भी नीलकंठ हो जाता

तो मैं भी नीलकंठ हो जाता
पी लेता कुछ अंश विष के
तो मैं भी नीलकंठ हो जाता

ढूँढ के लाया बांस की कोपल बड़ी मुश्किल से
एक लौ जल जाती तो बंसरी बन जाता

अभी जला लेने दो शाम के दीपक जरा
ढूँढ़ता वैसे क्षण जो मैं सुदामा बन पाता

मिल जाते वो अंश श्याम रंग मुझमें भी जरा
पा लेता कभी शिव तो कभी कान्हा कहीं स्थिर खड़ा

सोचता हूँ छोड़ दूँ खुद को निढ़ाल खुले समंदर में
कभी द्वारिका कभी रामेश्वर का हो जाता

पी लेता कुछ अंश विष के तो
मैं भी नीलकंठ हो जाता।
श्रम को गुनाह कैसे कहूँ

क्या होना चाहता हूँ

अभिषेक पटेल “अभी”
मुख्य प्रबंधक,
अंचल कार्यालय, झांसी

मैं क्या था क्या हूँ और क्या होना चाहता हूँ।
मैं एक बार माँ तुझसे जार-जार रोना चाहता हूँ।।
“अभी” नींद से रूबरू हुए जमाना हो गया।
एक बार माँ का बिछाया बिछौना चाहता हूँ।।
मैं क्या था क्या हूँ और क्या होना चाहता हूँ।
मैं एक बार माँ तुझसे जार-जार रोना चाहता हूँ।।
जमाने भर की दौलत में खुद को खो दिया।
इस वास्ते माँ के आँगन का प्यारा कोना चाहता हूँ।।
मैं क्या था क्या हूँ और क्या होना चाहता हूँ।
मैं एक बार माँ तुझसे जार-जार रोना चाहता हूँ।।
चेहरा गुमसुम दिल है बंजर और आँखों में आंसू सूखे।
माँ तेरे प्यार की बारिश से खुद को भिगोना चाहता हूँ।।
मैं क्या था क्या हूँ और क्या होना चाहता हूँ।
मैं एक बार माँ तुझसे जार-जार रोना चाहता हूँ।।
झूठी शोहरत हवस सी दौलत और चेहरों पर सजे मुखौटे।
“माँ” तेरी सच्ची मूरत पर ये दुनिया खोना चाहता हूँ।।
मैं क्या था क्या हूँ और क्या होना चाहता हूँ।
मैं एक बार माँ तुझसे जार-जार रोना चाहता हूँ।।
तुझ बिन जीवन कैसा जीवन सोचकर घबराता है मन।
माँ तुझसे जीवन भर की डोरी का सहारा चाहता हूँ।।
मैं क्या था क्या हूँ और क्या होना चाहता हूँ।
मैं एक बार माँ तुझसे जार-जार रोना चाहता हूँ।।
दुनिया की बिछाई बारूद से बचने के वास्ते।
“अभी” माँ के आँचल में चुपचाप सोना चाहता हूँ मैं।।
मैं क्या था क्या हूँ और क्या होना चाहता हूँ।
मैं एक बार माँ तुझसे जार-जार रोना चाहता हूँ।।

हिंदी पखवाड़े के समापन समारोह में उपस्थित सभी अतिथिगण, कार्यपालकगण तथा स्टाफ सदस्यों का स्वागत करते हुए श्री धनराज टी., महाप्रबंधक (सीडीओ/राभा)

राजभाषा विभाग द्वारा हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए निर्मित विडियो का अवलोकन करते हुए कार्यपालकगण एवं स्टाफ सदस्य

हिंदी प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कृत करते हुए प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी तथा कार्यपालक निदेशकगण

कार्यक्रम के दौरान आयोजित संगीत संध्या एवं डांडिया नृत्य की कुछ झलकियाँ

सितंबर, 2022 माह के दौरान राजभाषा विभाग, कॉर्पोरेट कार्यालय द्वारा हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया गया। इस अवसर पर विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिसमें दिनांक - 14.09.2022 को अखिल भारतीय ऑनलाइन प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता से शुरूआत करते हुए हिंदी कविता पाठ प्रतियोगिता, स्मरण शक्ति प्रतियोगिता, कार्यपालकों के लिए अंताक्षरी प्रतियोगिता, मूक पहेली प्रतियोगिता, कार्यपालकों के लिए नोटिंग एवं बैंकिंग शब्दावली प्रतियोगिता, हिंदी गीत गायन एवं सुलेख प्रतियोगिता आदि का आयोजन किया गया।

दिनांक 29.09.2022 को आयोजित समापन समारोह के दौरान पुरस्कार वितरण एवं संगीत संध्या का भी आयोजन किया गया। प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी एवं कार्यपालक निदेशकगण द्वारा विजेताओं को पुरस्कृत किया गया। इस अवसर पर महाप्रबंधकगण, कार्यपालकगण एवं अन्य कई अधिकारी उपस्थित थे।

मोबाइल बैंकिंग के लाभ तथा नुकसान

पूर्णिमा
प्रबंधक
सहजनवा शाखा, गोरखपुर

मोबाइल बैंकिंग को ऑनलाइन इंटरनेट बैंकिंग की तुलना में अधिक सुरक्षित माना जाता है। मोबाइल की सहायता से, बैंकिंग उपयोगकर्ता (ग्राहक) अपनी धनराशि स्थानांतरित कर सकता है और बिलों का भुगतान कर सकता है, खाते में बची राशि की जाँच कर सकता है, अपने हाल ही में किए गए लेन-देन को देख सकता है, अपने एटीएम कार्ड को ब्लॉक कर सकता है।

मोबाइल बैंकिंग के लाभ :-

* मोबाइल बैंकिंग में केवल इंटरनेट की सहायता से ग्राहक अपने बैंक खाते से किसी अन्य बैंक खाते में कहीं से भी धनराशि स्थानांतरित कर सकता है।
* यह सुविधा मोबाइल उपयोगकर्ताओं के लिए 24 घंटे उपलब्ध है।
* मोबाइल बैंकिंग को ऑनलाइन इंटरनेट बैंकिंग की तुलना में अधिक सुरक्षित और जोखिम मुक्त कहा जाता है।
* मोबाइल की सहायता से, बैंकिंग उपयोगकर्ता धनराशि स्थानांतरित कर सकता है और बिलों का भुगतान कर सकता है, खाते में बची शेष राशि की जाँच कर सकता है, अपने हाल के लेन-देन को देख सकता है, अपने एटीएम कार्ड को ब्लॉक कर सकता है।
* बैंक, ग्राहकों को कम कीमत पर मोबाइल बैंकिंग सेवा प्रदान करते हैं।
* मोबाइल बैंकिंग के मुख्य लाभों में से एक बैंकिंग सेवाओं के आपके हाथ में होने की सुविधा है। ग्राहक घर बैठे ही बैंकिंग सेवा का लाभ उठा सकता है। व्यापारियों को अपना काम करवाने के लिए अपनी दुकान को छोड़कर बैंक में आने की जरूरत नहीं है। वह अपनी दुकान पर बैठे हुए ही किसी को भी पैसे ऑनलाइन भेज सकता है।
* बैंक या एटीएम में जाने और अपने खाते की शेष राशि की जांच करने, पैसे ट्रांसफर करने, अपने बिलों का भुगतान करने के लिए बैंक खुलने का इंतजार करने की कोई जरूरत नहीं है।
* मोबाइल बैंकिंग मे आप केवल तभी बैंक का लेनदेन कर सकते हैं जब आप अपने पंजीकृत मोबाइल फोन नंबर पर भेजे गए वन-टाइम पासवर्ड (ओटीपी) को दर्ज करते हैं।

मोबाइल बैंकिंग के नुकसान :-

* जैसे हर चीज के कुछ फायदे होते हैं तो साथ ही उसके नुकसान भी होते हैं। इसी प्रकार मोबाइल बैंकिंग के भी जहां इतने फायदे हैं वहां नुकसान भी हैं।
* जैसे कि मोबाइल बैंकिंग सभी मोबाइल फोन पर उपलब्ध नहीं है।
* कभी-कभी, आपको मोबाइल बैंकिंग सुविधा का उपयोग करने के लिए अपने फोन पर एप्लिकेशन इंस्टॉल करने की आवश्यकता होती है, जो कि हाई-एंड स्मार्टफोन पर उपलब्ध है।
* यदि ग्राहक के पास स्मार्टफोन नहीं है तो मोबाइल बैंकिंग का उपयोग सीमित हो जाता है।
* मोबाइल बैंकिंग के नियमित उपयोग की सेवा प्रदान करने के लिए बैंक द्वारा कुछ अतिरिक्त शुल्क लगाया जाता हैं।

* मोबाइल बैंकिंग मे उपयोगकर्ताओं को नकली एसएमएस संदेश और घोटाले होने का खतरा है।
* मोबाइल के खोने का मतलब है कि अपराधी आपके मोबाइल बैंकिंग पिन और अन्य संवेदनशील सूचनाओं तक आसानी से पहुँच सकते हैं।

मोबाइल बैंकिंग का प्रयोग करते समय ध्यान देने योग्य बातें

* मोबाइल बैंकिंग का प्रयोग करते समय बैंक द्वारा दिये गए OTP को किसी से साझा न करें।
* आप अपने मोबाइल में एक स्क्रीनलॉक लगा कर रखें जिससे कोई भी उसे बिना आपकी अनुमति के खोल न सके।
* अपने मोबाइल बैंकिंग को वाई फाई स्पॉट से एक्सेस न करें। यह बेहद खतरनाक हो सकता है।
* मोबाइल बैंकिंग का प्रयोग करते समय आप आसान पासवर्ड का उपयोग न करें।

अंत में एक सुझाव

* मोबाइल बैंकिंग का प्रयोग बहुत ध्यान से करें।

तुम बिन

दीपक गोस्वामी
वरिष्ठ प्रबंधक
अं.का., गोरखपुर

तू खुश है तो ऐसे लगता जैसे जग को जीत लिया हूँ।
मुसीबत के हर पल तेरे चुभते हैं अब काँटो जैसे,
एहसास मुझे कुछ ऐसे होता जैसे काँटों में खुद को खींच लिया हूँ,
तू खुश है तो ऐसे लगता जैसे जग को जीत लिया हूँ।

हर पल अब मेरे जेहन में ऐसे तू आया करती है
जैसे कोयल चहक चहक कर बागों में गाया करती है
तेरी भोली भोली बातें, मेरे जीवन की ये सौगातें,
बोले भगवन कि तुझको मैं कितना प्यारा मीत दिया हूँ।
तू खुश है तो ऐसे लगता जैसे जग को जीत लिया हूँ।

सूरत तेरी भोली भाली, तेरी वो मुस्कान निराली
संस्कार रग रग में तेरे जिसको अपने गीत दिया हूँ,
तू खुश है तो ऐसे लगता जैसे जग को जीत लिया हूँ।

परेशान हो फिर भी शायद कुछ तुम मुझसे छुपा रही हो,
मायूसी है दिल में लेकिन जबरन मुस्का रही हो,
खामोश सुबह से बैठा उदासी के बीच जीया हूँ,
तू खुश है तो ऐसे लगता जैसे जग को जीत लिया हूँ।

तू जीवन की राह दिखाती, गम आंसू और आह मिटाती
बातें तुमसे हो नही पाती, तुम बिन ऐसा जीवन मेरा जैसे दीपक हो बिन बाती,
पर इस अंधेरे में ही अब तो जीना सीख लिया हूँ,
तू खुश है तो ऐसे लगता जैसे जग को जीत लिया हूँ।

भारत में खुदरा बैंकिंग

अजय कुमार
मुख्य प्रबंधक, ऋण
अंचल कार्यालय, चिंसुरा

आज, मार्केटिंग मंत्र ग्राहकों को उनकी अपेक्षाओं से अधिक की पेशकश करके उन्हें प्रसन्न करना है। यह अधिक संतुष्ट ग्राहकों की ओर जाता है। यही बात बैंकिंग उद्योग पर भी लागू होती है। भारतीय अर्थव्यवस्था विनिर्माण से सेवा अर्थव्यवस्था की ओर बढ़ रही है, जहां बैंकिंग क्षेत्र में परिवर्तन हो रहा है। वित्तीय उत्पादों की मांग बढ़ रही है और सेवाओं के अनुकूल एक आवश्यकता बनती जा रही है। खुदरा बैंकिंग तेजी से बढ़ रही है। पहले इसे प्रमुख विदेशी और घरेलू बैंकों द्वारा निषिद्ध माना जाता था। लेकिन आज सभी बैंकों ने खुदरा बैंकिंग के महत्व को पहचान लिया है, जो व्यापक प्रतिस्पर्धा, नवाचार और उन्नत प्रौद्योगिकी के कारण संभव हो गया है। एक रिपोर्ट के अनुसार खुदरा बैंकिंग बाजार का आकार 2020 में USD 5,705.62 मिलियन था और 2028 तक USD 12,494.86 मिलियन तक पहुंचने का अनुमान है, जो 2021 से 2028 तक 10.28% की CAGR से बढ़ रहा है।

ग्राहक कनेक्टिविटी पर बढ़ते फोकस ने निगरानी क्षमताओं को बढ़ाया और खुदरा बैंकों द्वारा प्रदान किए गए ऋण तक त्वरित पहुंच के प्रावधान से अनुमानित वर्षों में खुदरा बैंकिंग बाजार को चलाने की उम्मीद है। खुदरा बैंकिंग बाजार रिपोर्ट बाजार का समग्र मूल्यांकन प्रदान करती है। रिपोर्ट प्रमुख खंड, प्रवृत्तियों, ड्राइवरों, संयम, प्रतिस्पर्धी परिदृश्य और बाजार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले कारकों का व्यापक विश्लेषण प्रस्तुत करती है।

खुदरा बैंकिंग, जिसे उपभोक्ता बैंकिंग भी कहा जाता है, को विशिष्ट मास-मार्केट बैंकिंग के रूप में परिभाषित किया जाता है जिसमें व्यक्तिगत ग्राहक बड़े वाणिज्यिक बैंकों की स्थानीय शाखाओं का उपयोग करते हैं। यह उन सेवाओं की पेशकश करता है जिनमें बचत और चेकिंग खाते, बंधक, व्यक्तिगत ऋण, डेबिट/क्रेडिट कार्ड और बहुत कुछ शामिल हैं। खुदरा बैंकिंग में मुख्य फोकस व्यक्तिगत ग्राहक पर होता है। खुदरा बैंकिंग का लक्ष्य व्यक्तिगत खुदरा ग्राहकों की ओर से यथासंभव अधिक से अधिक वित्तीय सेवाओं के लिए वन-स्टॉप-शॉप बनना है। खुदरा बैंकिंग प्रकृति में काफी व्यापक है। यह वाणिज्यिक बैंकों द्वारा व्यक्तिगत ग्राहकों के साथ उनकी बैलेंस शीट की देनदारियों और संपत्ति दोनों पक्षों से निपटने के लिए संदर्भित करता है। सावधि बचत/चालू खाते देनदारियों के पक्ष में आते हैं और गिरवी और ऋण संपत्ति के पक्ष में आते हैं। कई अन्य सेवाओं में क्रेडिट कार्ड या डिपॉजिटरी सेवाएं शामिल हैं। खुदरा बैंकिंग और खुदरा उधार अक्सर एक-दूसरे के साथ भ्रमित होते हैं लेकिन खुदरा उधार केवल खुदरा बैंकिंग का एक सबसेट है। व्यक्तिगत ग्राहक की आवश्यकता और आवश्यकता को खुदरा बैंकिंग में एकीकृत तरीके से एक्सेस और संपर्क किया जाता है।

खुदरा बैंकिंग उत्पाद

1. *खुदरा जमा उत्पाद*

बचत खाता : बचत खाता, बैंक या अन्य वित्तीय संस्थान में रखा गया ब्याज वाला खाता है। हालाँकि

ये खाते आम तौर पर मामूली ब्याज दर का भुगतान करते हैं, उनकी सुरक्षा और विश्वसनीयता उन्हें पार्किंग नकदी के लिए एक बढ़िया विकल्प बनाती है जिसे आप अल्पकालिक जरूरतों के लिए उपलब्ध कराना चाहते हैं।

चालू खाता : चालू खाता, जिसे वित्तीय खाते के रूप में भी जाना जाता है, एक प्रकार का जमा खाता है जिस पर कोई ब्याज नहीं दिया जाता है। इनमें नियमित रूप से बैंकों के साथ काफी अधिक संख्या में लेनदेन होता है।

सावधि जमा : सावधि जमा, एक प्रकार का जमा खाता है जहाँ पैसा कुछ समय में लिए बंद रहता है।

आवर्ती जमा : आवर्ती जमा एक विशेष प्रकार की सावधि जमा है, जो नियमित आय वाले लोगों को उनके आवती जमा खाते में हर महीने एक निश्चित राशि जमा करने और सावधि जमा पर लागू दर पर ब्याज अर्जित करने में मदद करती है।

वेतन खाता : वेतन खाता एक प्रकार का विशेष बचत खाता है जो वेतनभोगी ग्राहकों को दिया जाता है। वेतन खाता होने से नियोक्ताओं के लिए यह आसान हो जाता है और कर्मचारी को अनूठी सेवाएं और लाभ प्रदान करता है।

बीएसबीडीए : इसका मतलब बेसिक सेविंग्स बैंक डिपाजिट अकाउंट, एक प्रकार का सेविंग्स अकाउंट है जिसमें मिनिमम बैलेंस नहीं होता है। इसके विपरीत, एक बीएसबीडीए में अधिकतम खाता शेष होता है जिसे बनाये रखा जाता है।

2. खुदरा ऋण उत्पाद -

गृह ऋण- बढ़ते शहरीकरण और सस्ती बंधक दरों के कारण 2021-2026 के दौरान भारत में गृह ऋण बाजार लगभग 22% की तेज दर से बढ़ने का अनुमान है। विकासशील अर्थव्यवस्थाओं की तुलना में भारत में आवास ऋण की दर कम है, जो देश में गृह ऋण बाजार के विकास के अवसर प्रस्तुत करती है। इसके अलावा, आवास की तीव्र कमी के साथ किफायती आवास की ओर सरकार का जोर अगले पांच वर्षों में भारत के गृह ऋण को आगे बढ़ाने पर है। PMAY (प्रधान मंत्री आवास योजना) के माध्यम से सरकार का लक्ष्य 2022 तक शहरी क्षेत्रों में सभी के लिए आवास उपलब्ध कराना है।

कार ऋण : भारत में कार ऋण बाजार मूल्य के संदर्भ में 8% से अधिक की सीएजीआर से बढ़ने और वित्त वर्ष 2026 तक 60 मिलियन अमरीकी डालर तक पहुंचने का अनुमान है। बढ़ती निपटान आय और वाहनों के बढ़ते स्वामित्व के कारण पूर्वानुमान अवधि के दौरान भारतीय बाजार में कार ऋण के तेज दर से बढ़ने का अनुमान है। इसके अलावा, दहन इंजन वाहनों से इलेक्ट्रिक वाहनों, उत्पाद लॉन्च, इलेक्ट्रिक वाहनों की खरीद पर सरकार द्वारा दी जाने वाली सब्सिडी और उच्च वाहन प्रतिस्थापन दर की ओर बदलाव पूरे भारत में कारों की बिक्री को बढ़ावा दे रहा है, जिसके परिणामस्वरूप भारतीय कार ऋण बाजार को बढ़ावा मिल रहा है। बाइक की बिक्री भी बढ़ी है। बैंक आपकी कार या बाइक को फाइनेंस करने के लिए कई आकर्षक योजनाएं प्रदान करते हैं।

भारत वर्तमान में दुनिया में कारों और एमयूवी के लिए 5वां सबसे बड़ा बाजार है, लेकिन यह चौथा स्थान हासिल करने के लिए जापान को पछाड़ने के बहुत करीब है। इस सेगमेंट के विकास चालक आसान वित्त, कम ब्याज दरें, सेकेंड हैंड कार फाइनेंस की शुरुआत और दो पहिया वाहनों से चार पहिया वाहनों के लिए सवार का उन्नयन है।

शिक्षा ऋण : एक शिक्षा ऋण माध्यमिक शिक्षा या उच्च शिक्षा से संबंधित खर्चों के वित्तपोषण के

लिए उधार ली गई राशि है। शिक्षा ऋण का उद्देश्य ट्यूशन, पुस्तकों और आपूर्तिकर्ताओं और रहने के खर्चों की लागत को कवर करना है, जबकि उधारकर्ता डिग्री हासिल करने की प्रक्रिया में है। सरकार अपनी योजना के माध्यम से विद्या लक्ष्मी पोर्टल, पढ़ो प्रदेश जैसे कई लाभ भी प्रदान कर रही है और अधिस्थगन अवधि के दौरान सब्सिडी भी प्रदान कर रही है।

उपभोक्ता ऋण : उपभोक्ता ऋण, वह ऋण है जो उपभोक्ता को विशिष्ट प्रकार के व्यय के वित्तपोषण के लिए दिया जाता है। दूसरे शब्दों में, एक उपभोक्ता ऋण एक लेनदार द्वारा उपभोक्ता को दिया गया किसी भी प्रकार का ऋण है। ये ऋण आम तौर पर घरेलू सामान और उपकरण और यहां तक कि व्यक्तिगत उपकरण खरीदने के लिए प्रदान किए जाते हैं।

3. *अन्य खुदरा उत्पाद*

इसके अलावा फसल ऋण, क्रेडिट कार्ड, लॉकर, डिपॉजिटरी सेवाएं, बैंकएश्योरेंस, डेबिट कार्ड, इंटरनेट बैंकिंग, मोबाइल बैंकिंग आदि सेवाएं खुदरा बैंकिंग के माध्यम से प्रदान की जाती हैं।

रिटेल बैंकिंग के लाभ :

रिटेल बैंकिंग बैंकों के लिए अपनी कमाई बढ़ाने का एक बेहतर विकल्प बन गया है क्योंकि कॉरपोरेट को दिया जाने वाला उधार उच्च जोखिम वर्ग में आता है और आमतौर पर धीमी गति से चलता है। इस क्षेत्र में विभिन्न वर्ग के ग्राहकों की एक बड़ी संख्या शामिल है। इस प्रकार की बैंकिंग व्यक्तिगत और छोटी इकाइयों को उत्पादों की अनुकूलित और विस्तृत श्रृंखला प्रदान करती है। साथ ही जोखिम फैला हुआ है और रिकवरी बहुत अच्छी है। उत्पादों को व्यक्तिगत आवश्यकताओं के अनुसार डिजाइन, नियोजन और विपणन किया जा सकता है।

रिटेल बैंकिंग के फायदे और नुकसान :

फायदे

संसाधन पक्ष :

* चालू और बचत खातों के अलावा, खुदरा बैंकिंग में जमाराशियां तुलनात्मक रूप से स्थिर हैं। ये कोर डिपॉजिट बनाते हैं।
* बैंकों के सहायक कारोबार को बढ़ाने में मदद करता है।
* चालू और बचत खातों के मामले में ब्याज असंवेदनशील है।
* इस क्षेत्र के फंड कम लागत वाले फंड हैं।
* मजबूत ग्राहक आधार बनाने में मदद करता है।

संपत्ति पक्ष:

* धन के नियोजन के लिए, खुदरा बैंकिंग एक अच्छा अवसर है।
* जब बैंकिंग उत्पादों और सेवाओं की अत्यधिक मांग होती है, तो खुदरा बैंकिंग को उच्च विपणन प्रयासों की आवश्यकता नहीं होती है।
* उपभोक्ता ऋणों में कम जोखिम होता है और कम एनपीए की धारणा होती है।
* उत्पादकता गतिविधियों में निवेश के माध्यम से, यह राष्ट्र के आर्थिक पुनरोद्धार में मदद करता है।
* किफायती ऋण के माध्यम से, बैंकिंग का यह खंड लोगों की जीवन शैली में सुधार करता है और लोगों की आकांक्षाओं को पूरा करता है।
* विशाल ग्राहक आधार के कारण विविध पोर्टफोलियो बैंक के लिए जोखिम को कम करते हैं।

नुकसान :

* नए वित्तीय उत्पादों को डिजाइन करने में भारी पूंजी निवेश की आवश्यकता है। इसमें बैंक के लिए बहुत समय और लागत की आवश्यकता होती है।
* आज ग्राहकों द्वारा नेट बैंकिंग को शाखा बैंकिंग से बेहतर माना जाता है। यदि उनकी तकनीक उन्नत

नहीं है तो बैंकों के लिए अपने ग्राहकों को बनाए रखना संभव नहीं है। नेट बैंकिंग का उपयोग करने के इच्छुक ग्राहक किसी अन्य बैंक की सेवाओं पर स्विच कर सकते हैं।

* कई अन्य वित्तीय उत्पाद जैसे म्युचुअल फंड आदि ग्राहकों को अपनी ओर आकर्षित करते हैं।
* बैंक उचित स्तर तक प्रौद्योगिकी का दोहन करने में सक्षम नहीं है।
* बैंक बड़ी संख्या में निगरानी और अनुवर्ती कार्रवाई के लिए मानव संसाधन विभाग पर भारी खर्च कर रहे हैं।
* ऋण खातों की उचित अनुवर्ती कार्रवाई के अभाव में, लंबी अवधि के ऋण जैसे आवास ऋण जिसमें लंबी चुकौती अवधि शामिल है, एनपीए बन सकते हैं।
* थोक बैंकिंग की तुलना में, एक ग्राहक द्वारा खुदरा बैंकिंग में उधार ली गई राशि बहुत कम है। इसलिए, बैंक एक ग्राहक से भारी मुनाफा नहीं कमा पा रहा है।

भारत में खुदरा बैंकिंग की चुनौतियाँ:-

* बैंक के सामने प्रमुख चुनौतियाँ एक साथ ऋण वृद्धि और परिसंपत्ति की गुणवत्ता के बीच संतुलन बनाना और बढ़ती ब्याज दर परिदृश्य में लाभप्रदता को बनाए रखना है।
* प्रौद्योगिकी में प्रगति के साथ, खुदरा बैंकिंग नेटवर्क के प्रदर्शन के प्रबंधन, रखरखाव और अनुकूलन में आईटी विभाग के लिए जिम्मेदारियों और चुनौतियों में वृद्धि हुई है।
* खुदरा ऋण, जिसे उधारदाताओं के लिए एक सुरक्षित गढ़ माना जाता है, में महामारी वेतन कटौती और नौकरी छूटने के कारण दरार दिखाई दे रही है। खंड में कुल दबाव वाली संपत्ति वित्त वर्ष 2022 के अंत तक 2.9% से बढ़कर 5.8% होने की उम्मीद है। इसलिए एनपीए कम करने के उपाय किए जाने चाहिए।
* हाल के दिनों में, विभिन्न गतिविधियों जैसे सॉफ्टवेयर और हार्डवेयर रखरखाव, संपूर्ण एटीएम संचालन (नकदी, रिफिलिंग सहित) आदि की आउटसोर्सिंग बहुत महत्वपूर्ण हो गई है।
* उत्पादों या सेवाओं के संदर्भ में अपने ग्राहकों की जरूरतों और आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए बैंकों के पास अभिनव रणनीतिक प्रबंधन दृष्टिकोण होना चाहिए। आमतौर पर कहा जाता है कि, "एक अच्छा ग्राहक खोजने में महीनों लग जाते हैं लेकिन उसे खोने में कुछ ही सेकण्ड लगते हैं"। इसलिए बैंकों के पास अपने ग्राहक को जानने (केवाईसी) की रणनीति होनी चाहिए।
* जनता और प्रतिष्ठा के विश्वास को बनाए रखने के लिए, बैंकों से अपेक्षा की जाती है कि वे अपनी प्रतिबद्धताओं को पूरा करें और अपने ग्राहकों की सेवा करते समय अत्यधिक सावधानी बरतें।
* खुदरा बैंकिंग और कॉर्पोरेट बैंकिंग में बाजार हिस्सेदारी और लाभप्रदता बढ़ाने के लिए, ग्राहक की वफादारी बहुत महत्वपूर्ण है।
* ग्रामीण क्षेत्रों में शाखाओं और एटीएम की सीमित संख्या।
* ग्रामीण क्षेत्रों में उन लोगों को कम शिक्षा या प्रशिक्षण दिया जाता है जो अनपढ़ हैं और यह नहीं जानते कि बैंकिंग से बुनियादी लाभ कैसे प्राप्त करें, एटीएम चलाना तो भूल ही जाइए।
* यदि इन सभी चुनौतियों का सामना बैंकों द्वारा अत्यंत सावधानी और विचार-विमर्श के साथ किया जाता है, तो आने वाले वर्षों में खुदरा बैंकिंग एक बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

खुदरा बैंकिंग में सफलता के लिए रणनीतियाँ : खुदरा बैंकिंग क्षेत्र में सफलता प्राप्त करने के लिए बैंकों को निम्नलिखित रणनीति अपनानी चाहिए:

* उन्नत और नवीनतम तकनीक को अपनाना।
* सभी शाखाओं और कार्यालयों में कुशल जनशक्ति की उपलब्धता।

* नवोन्मेषी और प्रतिस्पर्धी उत्पादों और सेवाओं को तैयार करने के लिए व्यापक बाजार अनुसंधान किया जाना चाहिए।
* ग्राहक संबंध प्रबंधन का दृष्टिकोण अपनाकर ग्राहकों के साथ संबंधों का प्रबंधन करना।
* जमाराशियों और अग्रिमों में संतुलित और निरंतर वृद्धि होनी चाहिए।
* अधिक से अधिक वितरण चैनलों का पता लगाया जाना चाहिए।
* ग्राहकों को व्यक्तिगत अनुभव देते हुए मानवीय स्पर्श के साथ सेवा की गुणवत्ता में सुधार किया जाना चाहिए।
* उचित रणनीतिक लागत प्रबंधन को अपनाया जाना चाहिए।
* यूनिवर्सल बैंकिंग और वित्तीय सुपरमार्केट पर लगातार ध्यान दिया जाना चाहिए
* सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों की शाखाओं का व्यापक नेटवर्क है। यह उन्हें अन्य बैंकों पर अतिरिक्त लाभ प्रदान करता है। इन शाखाओं के माध्यम से बैंकों के पास अवसर है क्योंकि वे तृतीय-पक्ष उत्पाद बेच सकते हैं।
* सार्वजनिक, निजी और विदेशी बैंकों को अन्य बैंकों के साथ गठजोड़ करना चाहिए और अपनी पहुंच बढ़ाने के लिए और विभिन्न अन्य क्षेत्रों में उपस्थिति दर्ज करके रणनीतिक गठबंधन करना चाहिए। इससे उन्हें देश भर के ग्राहकों तक पहुंचकर लाभ उठाने में सक्षम बनाने में मदद मिलेगी।
* विभिन्न प्रक्रियाओं की आउटसोर्सिंग से समय और लागत की बचत होगी। अंततः इससे बैंकों को अपने मुख्य व्यवसाय क्षेत्र, यानी उनकी मुख्य योग्यता पर ध्यान केंद्रित करने में मदद मिलेगी। पूर्व प्रबंधन के लिए एटीएम को आउटसोर्स किया जाना चाहिए, जो बैंकों को किसी ऐसी चीज से निपटने से बचाएगा जो उनकी मुख्य योग्यता नहीं है।

निष्कर्ष :

भारत में वित्तीय क्षेत्र में सुधारों के बाद से, खुदरा बैंकिंग को बहुत प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ रहा है। आज बैंक को मौजूदा व्यवसाय को बनाए रखने और नए व्यवसाय पर कब्जा करने के लिए फूँक-फूँक कर कदम उठाने पढ़ रहे हैं। बैंक अपने खुदरा कारोबार को बढ़ाने के लिए होड़ कर रहे हैं। उत्पाद विकास और विभेदीकरण, विपणन, सूक्ष्म नियोजन, विवेकपूर्ण मूल्य निर्धारण, तकनीकी उन्नयन, अनुकूलन, घरेलू / इलेक्ट्रॉनिक / मोबाइल बैंकिंग, परिसंपत्ति देयता प्रबंधन और प्रभावी जोखिम प्रबंधन और तकनीक के क्षेत्रों में खुदरा बैंकिंग में निरंतर नवाचार होना चाहिए।

लेकिन भारतीय बैंकों में नवोन्मेषी उत्पादों में बहुत कम या कोई दिलचस्पी नहीं है। नवाचार केवल प्रौद्योगिकी या इंटरनेट या कंप्यूटर के माध्यम से ही नहीं होना चाहिए बल्कि यह ऐसा होना चाहिए कि इससे ग्रामीण क्षेत्रों को भी लाभ हो। आप केवल प्रौद्योगिकी पर भरोसा नहीं कर सकते हैं और ऐसे देश में तकनीक के जानकार बन सकते हैं जहां 2021 में इंटरनेट की पहुंच केवल 45% है।

जबकि खुदरा बैंकिंग असाधारण विकास के अवसर प्रदान करता है, चुनौतियां समान रूप से हतोत्साहित करने वाली हैं। इसलिए, बैंकों को चुनौतियों का आशावादी रूप से सामना करना चाहिए और लाभ कमाने के अवसरों का उपयोग करना चाहिए। खुदरा बैंकिंग व्यवसाय में सफलता, इस्तेमाल की जाने वाली तकनीक और संचालन की प्रभावशीलता पर निर्भर करती है। यह बैंकों को अपने प्रतिस्पर्धियों पर बढ़त प्रदान करता है। इसके अलावा, एक जिम्मेदार बैंक बनने के लिए ग्राहक हित सबसे महत्वपूर्ण होना चाहिए। इस क्षेत्र का ध्यान न केवल प्रति व्यक्ति ऋणग्रस्तता बढ़ाने पर होना चाहिए, बल्कि यह वृहत आर्थिक स्तर पर धन के सृजन के संदर्भ में होना चाहिए।

चोल राजवंश

भूपेश बारोट
प्रबंधक (राजभाषा)
राजभाषा विभाग,
कॉर्पोरेट कार्यालय

चोल (तमिल) प्राचीन भारत का एक राजवंश था। दक्षिण भारत में और पास के अन्य देशों में तमिल चोल शासकों ने 9वीं शताब्दी से 13वीं शताब्दी के बीच एक अत्यंत शक्तिशाली हिन्दू साम्राज्य का निर्माण किया। 'चोल' शब्द की व्युत्पत्ति विभिन्न प्रकार से की जाती रही है। कर्नल जेरिनो ने चोल शब्द को संस्कृत "काल" एवं "कोल" से संबद्ध करते हुए, इसे दक्षिण भारत के कृष्णवर्ण आर्य समुदाय का सूचक माना है। चोल शब्द को संस्कृत "चोर" तथा तमिल "चोल" से भी संबद्ध किया गया है किंतु इनमें से कोई मत ठीक नहीं है। आरंभिक काल से ही चोल शब्द का प्रयोग इसी नाम के राजवंश द्वारा शासित प्रजा और भूभाग के लिए व्यवहृत होता रहा है। संगमयुगीन मणिमेक्लै में चोलों को सूर्यवंशी कहा है। चोलों के अनेक प्रचलित नामों में शेंबियन् भी है। शेंबियन् के आधार पर उन्हें शिबि से उद्भूत सिद्ध करते हैं। 12वीं सदी के अनेक स्थानीय राजवंश अपने को करिकाल से उद्भूत कश्यप गोत्रीय बताते हैं। चोलों के उल्लेख अत्यंत प्राचीन काल से ही प्राप्त होने लगते हैं। कात्यायन ने चोड़ों का उल्लेख किया है। अशोक के अभिलेखों में भी इसका उल्लेख उपलब्ध है। किंतु इन्होंने संगमयुग में ही दक्षिण भारतीय इतिहास को संभवत: प्रथम बार प्रभावित किया। संगमकाल के अनेक महत्वपूर्ण चोल सम्राटों में करिकाल अत्यधिक प्रसिद्ध हुए। संगमयुग के पश्चात् का चोल इतिहास अज्ञात है। फिर भी चोल-वंश-परंपरा एकदम समाप्त नहीं हुई थी क्योंकि रेनंडु (जिला कुडाया) प्रदेश में चोल पल्लवों, चालुक्यों तथा राष्ट्रकूटों के अधीन शासन करते रहे।

चोलों का उदय - उपर्युक्त दीर्घकालिक प्रभुत्वहीनता के पश्चात् नवीं सदी के मध्य से चोलों का पुनरुत्थान हुआ। इस चोल वंश का संस्थापक विजयालय (850-870-71ई.) पल्लव अधीनता में उरैयुर प्रदेश का शासक था। विजयालय की वंश परंपरा में लगभग 20 राजा हुए जिन्होंने कुल मिलाकर चार सौ से अधिक वर्षों तक शासन किया। विजयालय के पश्चात् आदित्य प्रथम (871-907), परांतक प्रथम (907-955) ने क्रमश: शासन किया। परांतक प्रथम ने पाण्ड्य-सिंहल नरेशों की सम्मिलित शक्ति को, पल्लवों, बाणों, बैडुंबों के अतिरिक्त राष्ट्रकूट कृष्ण द्वितीय को भी पराजित किया। चोल शक्ति एवं साम्राज्य का वास्तविक संस्थापक परांतक ही था। उसने लंकापति उदय (945-53) के समय सिंहल पर भी एक असफल आक्रमण किया। परांतक अपने अंतिम दिनों में राष्ट्रकूट सम्राट् कृष्ण तृतीय द्वारा 949 ई. में बड़ी बुरी तरह पराजित हुआ। इस पराजय के फलस्वरूप चोल साम्राज्य की नींव हिल गई। परांतक प्रथम के बाद के 32 वर्षों में अनेक चोल राजाओं ने शासन किया। इनमें गंडरादित्य, अरिंजय और सुंदर चोल या परातक द्वितीय प्रमुख थे।

तंजावुर के बृहदेश्वर मंदिर में राजराज चोल की प्रतिमा

इसके पश्चात् राजराज प्रथम (985-1014) ने चोल वंश की प्रसार नीति को आगे बढ़ाते हुए अपनी अनेक विजयों द्वारा अपने वंश की मर्यादा को पुन: प्रतिष्ठित किया। उसने सर्वप्रथम पश्चिमी गंगों को पराजित कर उनका प्रदेश छीन लिया। तदनंतर, पश्चिमी चालुक्यों से उनका दीर्घकालिक परिणामहीन युद्ध आरंभ हुआ। इसके विपरीत राजराज को सुदूर दक्षिण में, आशातीत सफलता मिली। उन्होंने केरल नरेश को पराजित किया। पांड्यों को पराजित कर मदुरा और कुर्ग में स्थित उद्गै को अधिकृत कर लिया। यही नहीं, राजराज ने सिंहल पर आक्रमण करके उसके उत्तरी प्रदेशों को अपने राज्य में मिला लिया।

राजराज ने पूर्वी चालुक्यों पर आक्रमण कर वेंगी को जीत लिया। किंतु इसके बाद पूर्वी चालुक्य सिंहासन पर उन्होंने शक्तिवर्मन् को प्रतिष्ठित किया और अपनी पुत्री कुंदवा का विवाह शक्तिवर्मन् के अनुज विमलादित्य से किया। इस समय कलिंग के गंग राजा भी वेंगी पर दृष्टि गड़ाए थे, राजराज ने उन्हें भी पराजित किया।

राजराज के पश्चात् उनके पुत्र राजेंद्र प्रथम (1012-1044) सिंहासनारूढ़ हुए। राजेंद्र प्रथम भी अत्यंत शक्तिशाली सम्राट् थे। राजेंद्र ने चेर, पाण्ड्य एवं सिंहल जीता तथा उन्हें अपने राज्य में मिला लिया। उन्होंने पश्चिमी चालुक्यों को कई युद्धों में पराजित किया, उनकी राजधानी को ध्वस्त किया किंतु उन पर पूर्ण विजय न प्राप्त कर सके। राजेंद्र के दो अन्य सैनिक अभियान अत्यंत उल्लेखनीय हैं। उनका प्रथम सैनिक अभियान पूर्वी समुद्र तट से कलिंग, उड़ीसा, दक्षिण कोशल आदि के राजाओं को पराजित करता हुआ बंगाल के विरुद्ध हुआ। उन्होंने पश्चिम एवं दक्षिण बंगाल के तीन छोटे राजाओं को पराजित करने के साथ साथ शक्तिशाली पाल राजा महीपाल को भी पराजित किया। अभिलेखों के अनुसार इस अभियान का कारण गंगाजल प्राप्त करना था। यह भी ज्ञात होता है कि पराजित राजाओं को यह जल अपने सिरों पर ढोना पड़ा था। किंतु यह मात्र आक्रमण था, इससे चोल साम्राज्य की सीमाओं पर कोई असर नहीं पड़ा।

राजेंद्र का दूसरा महत्वपूर्ण आक्रमण मलयद्वीप, जावा और सुमात्रा के शैलेंद्र शासन के विरुद्ध हुआ। यह पूर्ण रूप से नौ-सैनिक आक्रमण था। शैलेंद्र सम्राटों का राजराज से मैत्रीपूर्ण व्यवहार था किन्तु राजेंद्र के साथ उनकी शत्रुता का कारण अज्ञात है। राजेंद्र को इसमें सफलता मिली। राजराज की भाँति राजेंद्र ने भी एक राजदूत चीन भेजा।

राजाधिराज प्रथम (1018-1054) राजेंद्र का उत्तराधिकारी था। उसका अधिकांश समय विद्रोहों के शमन में लगा। आरंभ में उसने अनेक छोटे-छोटे राज्यों तथा चेर, पाण्ड्य एवं सिंहल के विद्रोहों का दमन किया। अनंतर इसके चालुक्य सोमेश्वर से हुए कोप्पम् के युद्ध में उसकी मृत्यु हुई। युद्धक्षेत्र में ही राजेंद्र द्वितीय (1052-1064) का अभिषेक हुआ। चालुक्यों के विरुद्ध हुए इस युद्ध में उनकी विजय हुई। चालुक्यों के साथ युद्ध दीर्घकालिक था। राजेंद्र द्वितीय के उत्तराधिकारी वीर राजेंद्र (1063-1069) ने अनेक युद्धों में विजय प्राप्त की और प्राय: संपूर्ण चोल साम्राज्य पर पूर्ववत् शासन किया। अधिराजेंद्र (1067-1070) वीर राजेंद्र का उत्तराधिकारी था किंतु कुछ महीनों के शासन के बाद कुलोत्तुंग प्रथम ने उससे चोल राज्यश्री छीन ली।

कुलोत्तुंग प्रथम (1070-1120) पूर्वी चालुक्य सम्राट् राजराज का पुत्र था। कुलोत्तुंग की माँ एवं मातामही क्रमश: राजेंद्र (प्रथम) चोल तथा राजराज प्रथम की पुत्रियाँ थीं। कुलोत्तुंग प्रथम स्वयं राजेंद्र द्वितीय की पुत्री से विवाहित था। कुलोत्तुंग ने अपने विपक्ष एवं अधिराजेंद्र के पक्ष से हुए समस्त विद्रोहों का दमन करके अपनी स्थिति सुदृढ़ कर ली। अपने विस्तृत शासनकाल में उसने अधिराजेंद्र के हिमायती एवं बहनोई चालुक्य सम्राट् विक्रमादित्य के अनेक आक्रमणों एवं विद्रोहों का सफलतापूर्वक सामना किया। सिंहल फिर भी स्वतंत्र हो ही गया। युवराज विक्रम चोल के प्रयास से कलिंग का दक्षिणी प्रदेश कुलोत्तुंग के राज्य में मिला लिया गया। कुलोत्तुंग ने अपने अंतिम दिनों तक सिंहल के अतिरिक्त प्राय: संपूर्ण चोल साम्राज्य तथा दक्षिणी कलिंग प्रदेश पर शासन किया। उसने एक राजदूत भी चीन भेजा।

विक्रम चोल (1118-1133) कुलोत्तुंग का उत्तराधिकारी हुआ। लगभग 1118 में विक्रमादित्य छठे ने वेंगी चोलों

से छीन ली। होयसलों ने भी चोलों को कावेरी के पार भगा दिया और मैसूर प्रदेश को अधिकृत कर लिया।

कुलोत्तुंग प्रथम के बाद का लगभग सौ वर्ष का चोल इतिहास अधिक महत्वपूर्ण नहीं है। इस अवधि में विक्रम चोल, कुलोत्तुंग द्वितीय (1133-1150), राजराज द्वितीय (1146-1173), राजाधिराज द्वितीय (1163-1179), कुलोत्तुंग तृतीय (1178-1218) ने शासन किया। इन राजाओं के समय चोलों का उत्तरोत्तर अवसान होता रहा। राजराज तृतीय (1216-1246) को पाण्ड्यों ने बुरी तरह पराजित किया और उसकी राजधानी छीन ली। चोल सम्राट् अपने आक्रामकों एवं विद्रोहियों के विरुद्ध शक्तिशाली होयसलों से सहायता लेते थे और इसी कारण धीरे-धीरे वे उनके हाथ की कठपुतली बन गए। राजराज को एक बार पाण्ड्यों से पराजित होकर भागते समय कोप्पेरुंजिग ने आक्रमण कर बंदी बना लिया, परन्तु छोड़ दिया।

चोल वंश का अंतिम राजा राजेंद्र तृतीय (1246-1279) हुआ। आरंभ में राजेंद्र को पाण्ड्यों के विरुद्ध आंशिक सफलता मिली किंतु ऐसा प्रतीत होता है कि तेलुगु-चोड़ साम्राज्य पर गंडगोपाल तिक्क राजराज तृतीय की नाममात्र की अधीनता में शासन कर रहा था। गणपति काकतीय के कांची आक्रमण के पश्चात् तिक्क ने उसी की अधीनता स्वीकार की। अंततः जटावर्मन् सुंदर पाण्ड्य ने उत्तर पर आक्रमण किया और चोलों को पराजित किया। इसके बाद से चोल शासक पाण्ड्यों के अधीन रहे और उनकी यह स्थिति भी 1310 में मलिक काफ़ूर के आक्रमण से समाप्त हो गई। (चोल सम्राट् साधारणतया अपने राज्य का आरंभ अपने यौवराज्याभिषेक से मानते थे और इसीलिए उनके काल के कुछ आरंभिक वर्ष एवं उनके तत्काल पूर्ववर्ती सम्राट् के कुछ अंतिम वर्षों में समानता प्राप्त होती है)।

शासन व्यवस्था- चोलों के अभिलेखों आदि से ज्ञात होता है कि उनका शासन सुसंगठित था। राज्य का सबसे बड़ा अधिकारी राजा मंत्रियों एवं राज्याधिकारियों की सलाह से शासन करता था। शासन सुविधा की दृष्टि से सारा राज्य अनेक मंडलों में विभक्त था। मंडल कोट्टम या वलनाडुओं में बँटे होते थे। इनके बाद की शासकीय परंपरा में नाडु (जिला), कुर्रम् (ग्रामसमूह) एवं ग्रामम् थे। चोल राज्यकाल में इनका शासन जनसभाओं द्वारा होता था। चोल ग्रामसभाएँ "उर" या "सभा" कही जाती थीं। इनके सदस्य सभी ग्राम निवासी होते थे। सभा की कार्यकारिणी परिषद (आडुगणम्) का चुनाव ये लोग अपने में से करते थे। उत्तरमेरूर से प्राप्त अभिलेख से उस ग्रामसभा के कार्यों आदि का विस्तृत ज्ञान प्राप्त होता है। उत्तरमेरूर ग्राम शासन सभा की पाँच उप समितियों द्वारा होता था। इनके सदस्य अवैतनिक थे एवं उनका कार्यकाल केवल वर्ष भर का होता था। ये अपने शासन के लिए स्वतंत्र थीं एवं सम्राट आदि भी उनकी कार्यवाही में हस्तक्षेप नहीं कर सकते थे।

नटराज की कांस्य प्रतिमा - चोल शासक प्रसिद्ध भवन निर्माता थे। सिंचाई की व्यवस्था, राजमार्गों के निर्माण आदि के अतिरिक्त उन्होंने नगर एवं तंजौर में विशाल मंदिर बनवाया। यह प्राचीन भारतीय मंदिरों में सबसे अधिक ऊँचा एवं बड़ा है। तंजौर के मंदिर की दीवारों पर अंकित चित्र उल्लेखनीय एवं बड़े महत्वपूर्ण हैं। राजेंद्र प्रथम ने अपने द्वारा निर्मित नगर गंगैकोंडपुरम् (त्रिचनापल्ली) में इस प्रकार के एक अन्य विशाल मंदिर का निर्माण कराया। चोलों के राज्यकाल में मूर्तिकला का भी प्रभूत विकास हुआ। इस काल की पाषाण एवं धातु मूर्तियाँ अत्यंत सजीव एवं कलात्मक हैं।

चोल शासन के अंतर्गत साहित्य की भी बड़ी

उन्नति हुई। इनके शक्तिशाली विजेताओं की विजयों आदि को लक्ष्य कर अनेकानेक प्रशस्ति पूर्ण ग्रंथ लिखे गए। इस प्रकार के ग्रंथों में जयंगोंडार का "कलिगंत्तुपर्णि" अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसके अतिरिक्त तिरुत्तक्कदेव लिखित "जीवक चिंतामणि", तमिल महाकाव्यों में अन्यतम माना जाता है। इस काल के सबसे बड़े कवि कंबन थे। इन्होंने तमिल "रामायण" की रचना कुलोत्तुंग तृतीय के शासनकाल में की। इसके अतिरिक्त व्याकरण, कोष, काव्यशास्त्र तथा छंद आदि विषयों पर बहुत से महत्वपूर्ण ग्रंथों की रचना भी इस समय हुई।

सांस्कृतिक स्थिति- चोल साम्राज्य की शक्ति बढ़ने के साथ ही सम्राट् के गौरव ओर ऐश्वर्य के भव्य प्रदर्शन के कार्य बढ़ गए थे। राजभवन, उसमें सेवकों का प्रबंध और दरबार में, उत्सवों और अनुष्ठानों में यह प्रवृत्ति परिलक्षित होती है। सम्राट् अपने जीवनकाल ही में युवराज को शासन प्रबन्ध में अपने साथ संबंधित कर लेता था। सम्राट के पास उसकी मौखिक आज्ञा के लिए भी विषय एक सुनिश्चित प्रणाली के द्वारा आता था, एक सुनिश्चित विधि में ही वह कार्य रूप में परिणत होता था। राजा को परामर्श देने के लिए विभिन्न प्रमुख विभागों के कर्मचारियों का एक दल, जिसे 'उडनकूट्टम' कहते थे। सम्राट् के निरंतर संपर्क में रहता था। सम्राट् के निकट संपर्क में अधिकारियों का एक संगठित विभाग था जिसे ओलै कहते थे। चोल साम्राज्य में नौकरशाही सुसंगठित और विकसित थी जिसमें अधिकारियों के उच्च (पेरुंदनम्) और निम्न (शिरुदनम्) दो वर्ग थे। केंद्रीय विभाग की ओर से स्थानीय अधिकारियों का निरीक्षण और नियंत्रण करने के लिए कणकाणि नाम के अधिकारी होते थे। शासन के लिए राज्य वलनाडु अथवा मंडलम्, नाडु और कूर्रम् में विभाजित था। संपूर्ण भूमि नापी हुई थी और करदायी तथा करमुक्त भूमि में बँटी थी। करदायी भूमि के भी स्वाभाविक उत्पादन शक्ति और फसल के अनुसार, कई स्तर थे। कर के लिए, संपूर्ण ग्राम उत्तरदायी था। कभी-कभी कर एकत्रित करने में कठोरता की जाती थी। भूमिकर के अतिरिक्त चुंगी, व्यवसायों और मकानों तथा विशेष अवसरों और उत्सवों पर भी कर थे। सेना अनेक सैन्य दलों में बँटी थी जिनमें से कई के विशिष्ट नामों का उल्लेख अभिलेखों में मिलता है। सेना राज्य के विभिन्न भागों में शिविर (कडगम) के रूप में फैली थी। दक्षिण-पूर्वी एशिया में चोलों की विजय उनके जहाजी बेड़े के संगठन और शक्ति का स्पष्ट प्रमाण है। न्याय के लिए गाँव और जाति की सभाओं के अतिरिक्त राज्य द्वारा स्थापित न्यायालय भी थे। निर्णय सामाजिक व्यवस्थाओं, लेखपत्र और साक्षी के प्रमाण के आधार पर होते थे। मानवीय साक्ष्यों के अभाव में दिव्यों का भी सहारा लिया जाता था।

चोल शासन की प्रमुख विशेषता सुसंगठित नौकरशाही के साथ उच्च कोटि की कुशलता वाली स्थानीय स्वायत्त संस्थाओं का सुंदर और सफल सामंजस्य है। स्थानीय जीवन के विभिन्न अंगों के लिए विविध सामूहिक संस्थाएँ थीं जो परस्पर सहयोग से कार्य करती थीं। नगरम् उन स्थानों की सभाएँ थीं, जहाँ व्यापारी वर्ग प्रमुख था। ऊर गांव के उन सभी व्यक्तियों की सभा थी जिनके पास भूमि थी। 'सभा ब्रह्मदेय' गाँवों के ब्राह्मणों की सामूहिक संस्था का विशिष्ट नाम था। राज्य की ओर से साधारण नियंत्रण और समय पर आय व्यय के निरीक्षण के अतिरिक्त इन सभाओं को पूर्ण स्वतंत्रता थी। इनके कार्यों के संचालन के लिए अत्यंत कुशल और संविधान के नियमों की दृष्टि से संगठित और विकसित समितियों की व्यवस्था थी जिन्हें वारियम् कहते थे। उत्तरमेरूर की सभा ने परांतक प्रथम के शासनकाल में अल्प समय के अंतर पर ही दो बार अपने संविधान में परिवर्तन किए जो इस बात का प्रमाण है कि ये सभाएँ अनुभव के अनुसार अधिक कुशल व्यवस्था को अपनाने के लिये तत्पर रहती थी। इन सभाओं के कर्तव्यों का क्षेत्र व्यापक और विस्तृत था। चोल नरेशों ने सिंचाई की सुविधा के लिए कुएँ और तालाब खुदवाए और नदियों के प्रवाह को रोककर पत्थर के बाँध से घिरे जलाशय (डैम) बनवाए। करिकाल चोल ने कावेरी नदी पर बाँध बनवाया था। राजेंद्र प्रथम ने गंगैकोंड-चोलपुरम् के समीप एक झील खुदवाई जिसका बाँध 16 मील लंबा था। इसको दो नदियों के जल से भरने की व्यवस्था की गई और सिंचाई के लिए इसका उपयोग करने के लिए पत्थर की प्रणालियाँ और नहरें बनाई गई। आवागमन की सुविधा के लिए प्रशस्त राजपथ और नदियों पर घाट भी निर्मित हुए।

सामाजिक जीवन में यद्यपि ब्राह्मणों को अधिक अधिकार प्राप्त थे और अन्य वर्गों से अपना पार्थक्य दिखलाने के लिए उन्होंने अपनी अलग बस्तियाँ बसानी शुरू कर दी थी फिर भी विभिन्न वर्गों के परस्पर संबंध कटु नहीं थे। सामाजिक व्यवस्था को धर्मशास्त्रों के आदेशों और आदर्शों के अनुकूल रखने का प्रयन्त होता था। कुलोत्तुंग प्रथम के शासनकाल में एक गाँव के भट्टों ने शास्त्रों का अध्ययन कर रथकार नाम की अनुलोम जाति के लिए सम्मत जीविकाओं का निर्देश किया। उद्योग और व्यवसाय में लगे सामाजिक वर्ग दो भागों में विभक्त थे- वलंगै और इडंगै। स्त्रियों पर सामाजिक जीवन में किसी भी प्रकार का प्रतिबंध नहीं था। वे संपत्ति की स्वामिनी होती थीं। उच्च वर्ग के पुरुष बहुविवाह करते थे। सती का प्रचार था। मंदिरों में गुणशीला देवदासियाँ रहा करती थीं। समाज में दासप्रथा प्रचलित थी। दासों की कई कोटियाँ होती थीं।

आर्थिक जीवन का आधार कृषि थी। भूमि का स्वामित्व समाज में सम्मान की बात थी। कृषि के साथ ही पशुपालन का व्यवसाय भी समुन्नत था। स्वर्णकार, धातुकार और जुलाहों की कला उन्नत दशा में थी। व्यापारियों की अनेक श्रेणियाँ थीं जिनका संगठन विस्तृत क्षेत्र में कार्य करता था। नानादेश-तिशैयायिरत्तु ऐञ्जूरुंवर व्यापारियों की एक विशाल श्रेणी थी जो वर्मा और सुमात्रा तक व्यापार करती थी।

तंजावुर के बृहदेश्वर मंदिर के गोपुरम के कोने का दृश्य

चोल सम्राट शिव के उपासक थे लेकिन उनकी नीति धार्मिक सहिष्णुता की थी। उन्होंने बौद्धों को भी दान दिया। जैन भी शांतिपूर्वक अपने धर्म का पालन और प्रचार करते थे। पूर्वयुग के तमिल धार्मिक पद वेदों जैसे पूजित होने लगे और उनके रचयिता देवता स्वरूप माने जाने लगे। नंबि आंडार, नंबि ने सर्वप्रथम राजराज प्रथम के राज्यकाल में शैव धर्मग्रंथों को संकलित किया। वैष्णव धर्म के लिए यही कार्य नाथमुनि ने किया। उन्होंने भक्ति के मार्ग का दार्शनिक समर्थन प्रस्तुत किया। उनके पौत्र आलवंदार अथवा यमुनाचार्य का वैष्णव आचार्यो में महत्वपूर्ण स्थान है। रामानुज ने विशिष्टाद्वैत दर्शन का प्रतिपादन किया मंदिरों की पूजा विधि में सुधार किया और कुछ मंदिरों में वर्ष में एक दिन अंत्यजों के प्रवेश की भी व्यवस्था की। शैवों में भक्तिमार्ग के अतिरिक्त वीभत्स आचारों वाले कुछ संप्रदाय, पाशुपत, कापालिक और कालामुख जैसे थे, जिनमें से कुछ स्त्रीत्व की आराधना करते थे जो प्रायः विकृत रूप ले लेती थी। देवी के उपासकों में अपना सिर काटकर चढ़ाने की भी प्रथा थी। इस युग के धार्मिक जीवन में मंदिरों का विशेष महत्व था। छोटे या बड़े मंदिर, चोल राज्य के प्रायः सभी नगरों और गाँवों में इस युग में बने। ये मंदिर, शिक्षा के केंद्र भी थे। त्योहारों और उत्सवों पर इनमें गान, नृत्य, नाट्य और मनोरंजन के आयोजन भी होते थे। मंदिरों के स्वामित्व में भूमि भी होती थी और कई कर्मचारी इनकी अधीनता में होते थे। ये बैंक का कार्य करते थे। कई उद्योगों और शिल्पों के व्यक्तियों को मंदिरों के कारण जीविका मिलती थी।

चिदम्बरम का नटराज मंदिर

चोलों के मंदिरों की विशेषता उनके विमानों और प्रांगणों में दिखलाई पड़ती है। इनके शिखरस्तंभ छोटे होते हैं, किंतु गोपुरम् पर अत्यधिक अलंकरण होता है। प्रारंभिक चोल मंदिर साधारण योजना की कृतियाँ हैं लेकिन साम्राज्य की शक्ति और साधनों की वृद्धि के साथ मंदिरों के आकार और प्रभाव में भी परिवर्तन हुआ। इन मंदिरों में सबसे अधिक प्रसिद्ध और प्रभावोत्पादक राजराज प्रथम द्वारा तंजोर में निर्मित राजराजेश्वर मंदिर, राजेंद्र प्रथम द्वारा गंगैकोंडचोलपुरम् में निर्मित गंगैकोंडचोलेश्वर मंदिर है। चोल युग अपनी कांस्य प्रतिमाओं की सुंदरता के लिए भी प्रसिद्ध है। इनमें नटराज की मूर्तियाँ सर्वोत्कृष्ट हैं। इसके अतिरिक्त शिव के दूसरे कई रूप, ब्रह्मा, सप्तमातृका, लक्ष्मी तथा भूदेवी के साथ विष्णु, अपने अनुचरों के साथ राम और सीता, शैव संत और कालियदमन करते हुए कृष्ण की मूर्तियाँ भी उल्लेखनीय हैं।

तमिल साहित्य के इतिहास में चोल शासनकाल को 'स्वर्ण युग' की संज्ञा दी जाती है। प्रबंध साहित्य रचना का प्रमुख रूप था। दर्शन में शैव सिद्धांत के शास्त्रीय विवेचन का आरंभ हुआ। शेक्किलार का तिरुत्तोंड पुराणम् या पेरियपुराणम् युगांतरकारी रचना है। वैष्णव भक्ति-साहित्य और टीकाओं की भी रचना हुई। आश्चर्य है कि वैष्णव आचार्य नाथमुनि, यामुनाचार्य और रामानुज ने प्रायः संस्कृत में ही रचनाएँ की हैं। टीकाकारों ने भी संस्कृत शब्दों में आक्रांत मणिप्रवाल शैली अपनाई। रामानुज की प्रशंसा में सौ पदों की रचना रामानुजनूर्रदादि इस दृष्टि से प्रमुख अपवाद है। जैन और बौद्ध साहित्य की प्रगति भी उल्लेखनीय थी। जैन कवि तिरुत्तक्कदेव ने प्रसिद्ध तमिल महाकाव्य जीवकचिंतामणि की रचना 10वीं शताब्दी में की थी। तोलामोलि रचित सूलामणि की गणना तमिल के पाँच लघु काव्यों में होती है। कल्लाडनार के कल्लाडम् में प्रेम की विभिन्न मनोदशाओं पर सौ पद हैं। राजकवि जयन्गोंडा ने कलिंगत्तुप्परणि में कुलोत्तुंग प्रथम के कलिंगयुद्ध का वर्णन किया है। ओटक्कूत्तन भी राजकवि था जिसकी अनेक कृतियों में कुलोत्तुंग द्वितीय के बाल्यकाल पर एक पिल्लैत्तामिल और तीन चोल राजाओं पर उला उल्लेखनीय हैं। प्रसिद्ध तमिल रामायणम् अथवा रामावतारम् की रचना कंबन् ने कुलोत्तुंग तृतीय के राज्यकाल में की थी। किसी अज्ञात कवि की सुंदर कृति कुलोत्तुंगन्कोवै में कुलोत्तुंग द्वितीय के प्रारंभिक कृत्यों का वर्णन है। जैन विद्वान् अमितसागर ने छंदशास्त्र पर याप्परुंगलम् नाम के एक ग्रंथ और उसके एक संक्षिप्त रूप (कारिगै) की रचना की। बौद्ध बुद्धमित्र ने तमिल व्याकरण पर वीरशोलियम् नाम का ग्रंथ लिखा। दंडियलंगारम् का लेखक अज्ञात है। यह ग्रंथ दंडिन के काव्यादर्श के आदर्श पर रचा गया है। इस काल के कुछ अन्य व्याकरण ग्रंथ हैं- गुणवीर पंडित का नेमिनादम् और वच्चणंदिमालै, पवणंदि का नन्नूल तथा ऐयनारिदनार का पुरप्पोरलवेण्बामालै। पिंगलम् नाम का कोश भी इसी काल की कृति है।

चोलवंश के अभिलेखों से ज्ञात होता है कि चोल नरेशों ने संस्कृत साहित्य और भाषा के अध्ययन के लिए विद्यालय (ब्रह्मपुरी, घटिका) स्थापित किए और उनकी व्यवस्था के लिए समुचित दान दिए। किंतु संस्कृत साहित्य में, सृजन की दृष्टि से, चोलों का शासनकाल अत्यल्प महत्व का है। उनके कुछ अभिलेख, जो संस्कृत में हैं, शैली में तमिल अभिलेखों से नीचे हैं। फिर भी वेंकट माधव का ऋग्वेद पर प्रसिद्ध भाष्य परांतक प्रथम के राज्यकाल की रचना है। केशवस्वामिन् ने नानार्थार्णवसंक्षेप नामक कोश को राजराज द्वितीय की आज्ञा पर ही बनाया था।

(साभार- गूगल)

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी महोदय

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कार्यपालक निदेशकगण

इंडियन बैंक Indian Bank
इलाहाबाद ALLAHABAD
आपका अपना बैंक, हर कदम आपके साथ
YOUR OWN BANK, ALWAYS WITH YOU

आज़ादी का अमृत महोत्सव

स्वयं सहायता समूह पंचसूत्र :

- नियमित बैठकें
- नियमित बचत
- नियमित आंतरिक उधार
- शीघ्र चुकौती
- रजिस्टरों का रखरखाव

मुद्रण दिनांक : 05.01.2023

कॉर्पोरेट कार्यालय: 254-260, अव्वै षण्मुगम सालै, रायपेट्टा, चेन्नै - 600 014

1800 425 000 00 www.indianbank.in हमें फॉलो करें: